



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 12] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 25, 1995 चैत्र 4, 1917)  
No. 12] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 25, 1995 (CHAITRA 4, 1917)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)  
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

### विषय-सूची

भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं . . . . .	पृष्ठ 359	भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii) —भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपलब्धियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्रतिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं) . . . . .	पृष्ठ *
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं . . . . .	269	भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश . . . . .	*
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं . . . . .	7	भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा-परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबंध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं . . . . .	263
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं . . . . .	451	भाग III—खण्ड 2—सेट्टेड कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेंटों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस . . . . .	241
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम . . . . .	*	भाग III—खण्ड 3—मुख्य प्रायुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं . . . . .	—
भाग II—खण्ड 1—क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ . . . . .	*	भाग III—खण्ड 4—विभिन्न अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं। . . . .	511
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट . . . . .	*	भाग IV—नैर-सरकारी व्यक्तियों और नैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस . . . . .	37
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिसमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपलब्धियां आदि भी शामिल हैं) . . . . .	*	भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को बताने वाला अनुपूरक . . . . .	*

## CONTENTS

	PAGE		PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court. . . . .	359	PART II—SECTION 3—Sub-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) . . . . .	*
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court . . . . .	269	PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence . . . . .	*
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . . . . .	7	PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India . . . . .	263
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence . . . . .	451	PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs . . . . .	241
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations . . . . .	*	PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners . . . . .	—
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations . . . . .	*	PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies . . . . .	511
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . . . . .	*	PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies . . . . .	37
PART II—SECTION 3—Sub-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) . . . . .	*	PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi . . . . .	*
PART II—SECTION 3—Sub-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) . . . . .	*		

## भाग I—खण्ड 1

## [PART I—SECTION II]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 10 मार्च, 1995

सं० 101-प्रेज/95—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को “उत्तम जीवन रक्षा पदक” प्रदान करने की स्वीकृति देते हैं :—

1. श्री चंदर सिंह, (मरणोपरांत)  
गुपुत्र श्री जीतू,  
ग्राम एव डाकघर—अतावला,  
तहसील एवं जिला—पानीपत,  
पानीपत, हरियाणा।

ग्राम अतावला, जिला पानीपत की निवासी श्रीमती सोना देवी के घर में 19 अप्रैल, 1994 को दुर्घटनावश आग लग गई थी। श्रीमती सोना देवी के बच्चे, जो इस घर की छत पर सो रहे थे, आग में घिर गए थे। यह देखकर श्रीमती सोना देवी के पड़ोसी श्री चन्दर सिंह ने बहादुरी पूर्वक आग बुझाने का प्रयास किया तथा आग में घिरे चार बच्चों के जीवन की रक्षा करने में कामयाब हो गए। इस दौरान घर की छत गिर पड़ी जिसके कारण श्री चन्दर सिंह गंभीर रूप से जखमी हो गए। उन्हें तत्काल हैदराबादी अस्पताल, पानीपत और उसके बाद रोहतक मेडिकल कालेज में लाया गया। लेकिन 17 मई, 1994 को उनकी मृत्यु हो गई।

2. श्री चन्दर सिंह ने आग में घिरे चार बच्चों की जान बचाने में अवध्य साहस एवं तत्परता का परिचय दिया और इस क्रम में उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

2. मास्टर एम० मंजूनाथ,  
गुपुत्र श्री मल्लिकार्जुन स्वामी,  
ओल्ड नं० 368, बी०डी०ए०,  
सं० 37 ई,  
अरुणाघाती नगर, गंगोडानाहल्ली,  
ज्ञान भारती, पी० एस० लिमिटेड,  
बंगलूर-560039, कर्नाटक।

गंगोडानाहल्ली, पी० एस० ज्ञान भारती, बंगलूर में 4 मार्च, 1994 को आग लग गई थी। चूंकि यह स्थान पहाड़ियों से घिरा हुआ था, इसलिए तेज हवा के चलते आग ने शीघ्र ही संपूर्ण क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया था। इस घटना में 120 झोपड़ियाँ जल गई थी और चार बच्चों की जान चली गई थी। मास्टर मंजूनाथ, जो अपनी झोपड़ी के सामने खेल रहा था, ने देखा कि विनय (2 वर्ष), किरण (3 वर्ष) तथा प्रसाद (10 माह) नामक तीन बच्चे जलती हुई एक झोपड़ी के अन्दर फँस हुए हैं। उन्होंने तत्काल उस झोपड़ी में प्रवेश करके विनय तथा किरण को बचा लिया और तत्काल इन बच्चों की दादी को सतर्क भी कर दिया जिसने तत्काल झोपड़ी में घुस कर निद्रामग्न 10 माह के प्रसाद की जान बचाई।

2. अपनी छोटी उम्र के बावजूद मास्टर एम० मंजूनाथ ने अपनी जान की परवाह न करते हुए अदम्य साहस एवं तत्परता का परिचय देते हुए तीन बच्चों को आग से जल कर मरने से बचा लिया।

3. मास्टर पी० सी० लालरेम्भुआता, (मरणोपरांत)  
गुपुत्र श्री पी० सी० रोहमिगधांगा,  
एस० ए०, पी० डब्ल्यू०डी० चांदमारी वेस्ट,  
ऐजल, मिजोरम।

मास्टर पी० सी० लालरेम्भुआता 17 नवम्बर, 1993 को अपने दो दोस्तों के साथ कपड़े धोने के लिए चांदमारी वेस्ट स्थित एक पुराने तालाब पर गए थे। दुर्घटनावश, मास्टर लालरेम्भुआता के दोनों दोस्त तालाब में गिर पड़े। इनमें से एक लड़का तो किसी तरह पानी से बाहर आ गया लेकिन दूसरा लड़का, जिसका नाम जयनाथिंगा है, पानी से बाहर आने में असमर्थ रहा और डूबने लगा। यह देखकर लालरेम्भुआता ने तत्काल पानी में छलांग लगा दी और डूबते हुए लड़के के पास पहुंचकर उसे धकेलते हुए तालाब की सीढ़ियों पर ले आए और इस प्रकार उसकी जान बचा ली। लेकिन इस क्रम में वे अपना संतुलन खो बैठे और तालाब में डूब गए।

मास्टर लालरेम्भुआता ने उच्च कोटि की बहादुरी तथा तत्परता का परिचय देते हुए डूबते हुए अपने दोस्त के

प्राणों की रक्षा की। लेकिन इस क्रम में उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

4. श्री दर्शन सिंह (मरणोपरांत)  
ग्राम भीरपुर (बीबीपुर)  
तहसील एवं जिला—पटियाला,  
पंजाब।

पंजाब के पटियाला जिले में 11 जुलाई, 1993 को अभूतपूर्व बाढ़ आई थी। श्री दर्शन ने अपने परिवार को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया ही था कि उन्होंने देखा कि उनकी झुग्गी को पानी की तेज धारा ने तहस-नहस कर दिया है। जब वे अपने बच्चे-बच्चे सामान को बचाने की कोशिश कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि छोटी नदी तथा समीपवर्ती क्षेत्रों में लगातार बढ़ रहे बाढ़ के तेज पानी में लोग बहते जा रहे हैं। बहुमूल्य मानव जीवन की रक्षा करने की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने छोटी नदी में छलांग लगा दी और पानी में बह रहे लोगों को बचाने में लग गए। अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए उन्होंने अगले दो दिनों के दौरान कई बार बाढ़ के पानी में छलांग लगाई और हर बार एक व्यक्ति को बचाया। इस प्रकार 13 जुलाई, 1993 के अपराह्न तक उन्होंने उन्नीस लोगों की जान बचाई।

2. उन्होंने 13 जुलाई, 1993 के अपराह्न में देखा कि तेज धारा के कारण गुरु नानक नगर से लोगों को सुरक्षित स्थान पर ले जा रही सना की एक नौका छोटी नदी को पार करते समय एक खंभे से टकरा गई है इसके कारण नौका का संतुलन बिगड़ गया और वह उलट कर डूब गई। श्री दर्शन सिंह, जो नदी की धारा से लगभग 30 गज की दूरी पर थे, ने तत्काल पानी में छलांग लगा दी और दो बच्चों को बचाकर बांध पर खड़े लोगों को सौंप दिया। हालांकि वे थक चुके, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और पुनः पानी की तेज धारा में छलांग लगा कर 114 इंजीनियर्स रेजिमेंट के कमान अधिकारी तथा बचाव दल के नेता कर्नल ए० के० गुप्ता को डूबने से बचाया। हालांकि श्री दर्शन सिंह बुरी तरह से थक चुके थे, लेकिन जब उन्होंने एक बच्चे को पानी में बहते देखा तो वे अपने आपको रोक नहीं सके और एक बार फिर पानी में कूद पड़े। बच्चे की जान बचाने के प्रयास में वे पानी के नीचे जल कुभी में फंस गए और पानी के नीचे चले गए। बाढ़ का पानी कम होने पर उनका शव नीचे की ओर 500 गज दूर नदी में बरामद किया गया था।

3. श्री दर्शन सिंह ने अपनी जान की जरा सी भी परवाह न करते हुए अनुकरणीय साहस एवं मानव-जीवन के प्रति अपूर्व आस्था का परिचय दिया। उन्होंने कई लोगों के प्राण बचाए, लेकिन इस क्रम में उन्होंने अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

5. श्री सुभाष चंदर (मरणोपरांत)  
मकान नं० 5095,  
मुहल्ला दलालपुरा,  
तिरखानी चौक,  
पटियाला, पंजाब।

जुलाई, 1993 के महीने में पंजाब के पटियाला जिले में भोयग बाढ़ अपने साथ भयंकर विनाश और तबाही लाई थी। 12 जुलाई, 1993 को नायब तहसीलदार, पाटरन के रीडर श्री सुभाष चंदर अपनी ड्यूटी पर थे जब शतराणा गांव तथा उसके आसपास के इलाकों में बाढ़ अपने पूरे जोरों पर थी। उस दिन श्री सुभाष चंदर सुबह से ही बचाव नौका का संचालन कर रहे थे तथा रात 8 बजे तक उन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर करीब 125 व्यक्तियों को बचाया। बिना सुरक्षा जैकेट के श्री चंदर इस विनाशकारी बाढ़ का मुकाबला करते रहे तथा अपनी नौका के इंजन में पेट्रोल समाप्त हो जाने पर उन्होंने उस इलाके में फंसे बाहनों से पेट्रोल निकाला और अपना बचाव कार्य करते रहे। हालांकि वे थक कर चूर हो गए थे परन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी थी, तथा अंधेरा घिर जाने की भी परवाह न करते हुए उन्होंने एक बार फिर दूर-दराज स्थित डेरों (दूर-दराज स्थित बस्तियों) में फंसे लोगों को निकालने का बीड़ा उठाया। लौटते समय श्री सुभाष चंदर के अथक प्रयासों के बावजूद, वह नौका, जिस पर वे बचाकर लाये गए छह लोगों को ला रहे थे, डूब जाने पर नौका पर सवार सभी लोगों के साथ उफनते हुए अथाह जल राशि में समा गए।

2. अपनी जान की परवाह किए बिना श्री सुभाष चंदर ने दूसरे लोगों की जान बचाने के अपने अनवरत प्रयासों में अनुकरणीय, साहस, अतुलनीय वीरता तथा उच्च कोटि की कर्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया और अपने इस प्रयास में उन्होंने प्राणों को न्योछावर कर दिया।

6. मास्टर गुरप्रीत सिंह (मरणोपरांत)  
गांव कोटला भंका  
जिला फतेहगढ़ साहिब,  
पंजाब।

दिनांक 2 मार्च, 1994 को प्रातः 9 बजे कुमारी मोहिन्दर कौर (2 वर्ष) तथा मास्टर प्रवीण सिंह (हाई वर्ष) रेलवे ट्रैक के पास खेल रहे थे। मास्टर गुरप्रीत सिंह जो कि निकट ही खड़े थे ने देखा कि एक गाड़ी तीव्र गति से बच्चों की दिशा में चली आ रही है वह महसूस करके कि दोनों बालक तेजी से आती गाड़ी से कुचले जा सकते हैं, मास्टर गुरप्रीत सिंह ने कुमारी मोहिन्दर कौर को रेल ट्रैक से परे धकेल दिया। तब दूसरे बालक को बचाने के इरादे से वे आगे बढ़े परन्तु इस प्रक्रिया में मास्टर गुरप्रीत सिंह तथा वह बच्चा मास्टर प्रवीण दोनों गाड़ी के नीचे आकर कुचले गए।

2. कुमारी मोहिन्दर कौर की जान बचाने में मास्टर गुरप्रीत सिंह ने विशिष्ट साहस तथा तत्परता का परिचय दिया परन्तु दूसरे बालक की जान बचाने के प्रयास में उन्होंने अपने प्राणों की बलि दे दी।

7. मास्टर सुरेन्द्र सिंह नेगी (भरणोपरांत)  
मकान नं० 69, पाकेट डी-113,  
सेक्टर-7, रोहिणी,  
दिल्ली-110085.

श्री लोकेश तथा श्री सुरेन्द्र, दो लड़के जो कि 15-16 आयु वर्ग के थे दिनांक 1 मई, 1994 को तकरीबन 11.00 बजे रोहिणी के निकट हैदरपुर नहर में नहाने के लिए गए। श्री लोकेश ने तैराकी के लिए पुल से नहर में छलांग लगा दी परन्तु वे डूबने लगे। तब वे सहायता के लिए चिल्लाए। सहायता के लिए अपने मित्र का आर्तनाद सुनने पर उसे बचाने के लिए श्री सुरेन्द्र ने भी नहर में छलांग लगा दी। किन्तु श्री लोकेश ने श्री सुरेन्द्र को इस तरह से जकड़ लिया कि श्री सुरेन्द्र न तो श्री लोकेश को ही बचा पाए और न ही खुद संभल पाए। इस प्रक्रिया में दोनों लड़कों ने अपनी जान गवां दी। उनके मृत शरीर बाद में फायर ब्रिगेड की सहायता से बरामद हुए।

श्री सुरेन्द्र सिंह नेगी ने अपने मित्र की जान बचाने के प्रयास में विशिष्ट साहस तथा तत्परता का परिचय दिया तथा इस प्रयास में सर्वोच्च बलिदान देते हुए स्वयं अपनी जान गवां दी।

गिरीश प्रधान  
निदेशक

सं० 102-प्रेज/95—राष्ट्रपति, नीचे उल्लिखित व्यक्तियों को "जीवन रक्षा पदक" दिए जाने की स्वीकृति देते हैं :—

1. श्री मेथूक तिरूपति रेड्डी,  
मकान नं० 11-22-305,  
पतापल्लु स्ट्रीट,  
कासीबगा, वारांगल-506002,  
(आंध्र प्रदेश)।

14 फरवरी, 1993 को गांव डोंगला सिगाराम के आठ लड़के जो कि 10 से 14 साल की आयु वर्ग के थे, तैराकी के लिए नजदीक गांव के तालाब में गए। तैरते समय राजू नामक एक लड़का जो कि तैराकी में कुशल नहीं था, अपना नियंत्रण खो बैठा और तालाब के गहरे पानी में डूबने लगा। दुर्घटना स्थल पर यह तालाब 163 मीटर चौड़ा तथा 9.30 मीटर गहरा है। मास्टर राजू की हालत देखकर दूसरे बालक मदद के लिए चिल्लाए। उनकी आंखें सुनकर दस आदमी तालाब पर दकदके हो गए

परन्तु आगे बढ़कर मास्टर राजू की बचाने की किसी की हिम्मत नहीं हुई। श्री मेथूक तिरूपति रेड्डी जो कि नजदीकी खेत में काम कर रहे थे, तुरन्त दुर्घटना स्थल पर दौड़ते हुए आये और उन्होंने उस समय तक बेहोश हो चुके मास्टर राजू को डूबने से बचा लिया। श्री रेड्डी ने तुरन्त मास्टर राजू को प्राथमिक चिकित्सा प्रदान की जिसके परिणामस्वरूप मास्टर राजू होश में आ गया।

2. अपने जीवन को जोखिम में डालकर श्री मेथूक तिरूपति रेड्डी ने एक बालक को डूबने से बचाने में विशिष्ट साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

2. श्री संजीत कुमार राठी  
बी०वी०एस०सी० और ए०एच०के छात्र  
(अंतिम वर्ष) अरावली हॉस्टल,  
कमरा नं० 56 सी, चौधरी चरण सिंह,  
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार (हरियाणा)।

1 नवम्बर, 1991 को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के छात्रों का विंगला-बाटोटे (जे०एच०के०) में बेसिक पर्वतारोहण पाठ्यक्रम चल रहा था कि उन्होंने एक जोर की आवाज सुनी। वे उस जगह की तरफ भागे और उन्होंने पाया कि सेना की एक गाड़ी सड़क से फिसल गयी है तथा पहाड़ों की ढलान में 200 फीट गहरे में गिर गई है। श्री संजीत कुमार राठी के नेतृत्व में छात्र रस्ती की सहायता में उस दुर्घटनाग्रस्त वाहन तक पहुँचे तथा उस वाहन में फंसे सेना के 3 जवानों तथा 2 नागरिकों को निकालने में सफल हुए। उन्होंने घायल व्यक्तियों को प्राथमिक चिकित्सा भी दी तथा उन्हें बाटोटे सेना हस्तपाल में ले गए।

2. इस प्रकार दुर्घटनाग्रस्त वाहन में फंसे 3 सेना के जवानों तथा 2 नागरिकों की जान बचाने में श्री संजीत कुमार राठी ने असाधारण पहल तथा नेतृत्व संबंधी विशिष्ट गुणों का परिचय दिया।

3. श्री संजीव शर्मा,  
सुपुत्र श्री जसवंत सिंह जे०ई०,  
हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड,  
आंध्र कालोनी, संदासू  
चिरगांव, जिला शिमला,  
हिमाचल प्रदेश।

5 जून, 1994 को श्री बलवंत सिंह जो कि "पडर" नदी के ऊपर बने पुल की रेलिंग पर बैठे थे अचानक नदी में गिर पड़े। चूंकि ऊपर पहाड़ों में बर्फ पिघलने के कारण नदी का बहाव बहुत तेज था, इसलिए वह नदी के साथ बह गए और नदी के बहाव के साथ लगभग 100 मीटर तक बहते चले गए। इस दुर्घटना के प्रत्यक्षदर्शी कालोनी के 30-40

आश्चर्यों में से कोई भी श्री बलवंत सिंह को बचाने नहीं आया। यह देखकर 10वीं कक्षा के छात्र श्री संजीव शर्मा ने पहल की और अपनी जान की परवाह किए बगैर वे नदी में कूद पड़े और तैरते हुए उस जगह तक पहुंच कर उन्होंने श्री बलवंत सिंह को बचा लिया।

2. श्री संजीव शर्मा ने अपने जीवन को होने वाले जोखिम की परवाह किए बगैर नदी में डूबते व्यक्ति की जान बचाने में विशिष्ट साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

4. श्री एम० बी० हमैनुअल,  
मेकैड डिबीजन असिस्टेंट,  
उप निदेशक,  
जन अनुवेश का कार्यालय,  
बीवर, कर्नाटक।

28/29 मार्च, 1993 की रात को श्री एम० बी० हमैनुअल अपने घर के आगे के अहाते में सो रहे थे। उसी अहाते में लगभग 100 फीट गहरा पीने के पानी का कुंआ था जिसका पानी का स्तर तकरीबन 100 फीट था परन्तु उसके चारों ओर समुचित रूप से बाड़ नहीं लगी हुई थी। एक नेत्रहीन बुद्ध महिला श्रीमती राजम्मा (60 वर्ष) जो कि उसी अहाते में रह रही थी, रात को शौच के लिए उठी। अपने घर लौटते समय वे रास्ता भूल गईं तथा कुर्घटनावज गहरे कुएं में गिर गईं। उनकी चिल्लाहट सुनकर श्री हमैनुअल जाग गए और उन्होंने पड़ोसियों को भी सतर्क कर दिया। उन्होंने रस्सी के साथ बाल्टी बांधकर कुएं में लटका दी। उस महिला ने रस्सी के साथ बंधी बाल्टी को पकड़ लिया परन्तु आधे रास्ते में उनकी पकड़ छूट गई और वह सिर के बल पुनः कुएं में गिर पड़ी इस अवस्था में श्री हमैनुअल ने पहल की और अपनी जान जोखिम में डालकर वे कुएं में उतर गए और उस महिला को बाल्टी में बिठाने में सफल हुए। तब महिला को सुरक्षा के साथ बाहर निकाल लिया गया। श्री हमैनुअल को भी इसी रस्सी की सहायता से बाहर निकाला गया परन्तु अपनी इस कीशिश में उन्हें सिर में चोट आई।

2. श्री एम० बी० हमैनुअल ने अपनी जान जोखिम में डालकर एक बुद्ध तथा नेत्रहीन महिला को कुएं में डूबने से बचाने में विशिष्ट साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

5. श्री गुरुराज नायक,  
गोपालपुरा शंठकाट्टे,  
सं० 2-122 श्री० शंठकाट्टे,  
गोपालपुरा, पुटर गांव,  
उडुपी तालुक-576125,  
कर्नाटक।

30 सितम्बर, 1992 को उडुपी तालुक के ग्राम पुट्टर के निवासी दो बच्चे नामतः हेमलता (10 वर्ष) तथा

विश्वनाथ (8 वर्ष) कुर्घटनावज 20 फुट गहरे कुएं में गिर गए। दोनों ही बच्चे डूबने ही वाले थे कि उसी गांव के श्री गुरुराज नायक ने इन बच्चों की कुर्घशा देखी और अपने प्राणों की परवाह न करते हुए तुरन्त कुएं में कूब गए और जूट की रस्सी की सहायता से इन दो बच्चों की प्राण रक्षा की।

2. श्री गुरुराज नायक ने उत्कृष्ट साहस, तत्परता तथा मानव जीवन के प्रति दिलचस्पी दिखाई और निश्चित भीत से दो बच्चों की प्राण रक्षा की।

6. श्री हनुमन्त मन्जु गौड़ा,  
कासरगोड़ हुबली,  
होन्नावर तालुक,  
उत्तर कन्नड़ जिला,  
कर्नाटक।

31 अगस्त, 1993 को कोंकण रेलवे लाइन के निर्माण कार्य पर लार्सन एण्ड टुओ कम्पनी द्वारा रोजगार पर लगाए गए 17 श्रमिक टनल के लिए ग्राउण्ड शाफ्ट के प्रबलन हेतु धरातल से 16 मीटर नीचे एक कुएं की खुदाई कर रहे थे। खुदाई के काम के लिए प्रयोग में लाया गया शाफ्ट अचानक टूट गया और टनल साढ़े तीन मीटर तक बैठ गया जिसमें 9 श्रमिक दब गए। तीन श्रमिक जो भीत के मुंह से बच गए, ने तुरन्त ही अपने साथी श्रमिक श्री दामोदर मंजैय्या नायक जो आधा दबा हुआ था, को बाहर निकाल दिया। बाव में श्री दामोदर मंजैय्या के साथ तीन श्रमिकों ने अपने चार साथियों को जानें बचाई।

2. श्री हनुमन्त मन्जु गौड़ा ने अपने दो अन्य साथियों के साथ अपने प्राणों के लिए गंभार खतरे की परवाह न करते हुए चार व्यक्तियों की जानें बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

7. श्री डी० कृष्ण मूर्ति,  
नं० 6/908, विजय विट्टल नगर,  
सिरुगुप्पा, बेल्लारी जिला,  
कर्नाटक।

19 नवम्बर, 1992 को सिरुगुप्पा पुलिस स्टेशन के तहत बागेबड़ी गांव तथा मुन्दावन गड्डे कैम्प में भारी बाढ़ आ गई जिससे बागेबड़ी गांव तथा मुन्दावन गड्डे कैम्प के निवासियों के लिए गम्भार स्थिति उत्पन्न हो गई। इस नाजुक मौके पर श्री डी० कृष्ण मूर्ति उस स्थल पर गए और एक देसी नौका की मदद से पानी में डूबे क्षेत्र से 104 व्यक्तियों के प्राण बचा लिए। बहुदुर्घ के इस काम की सराहना तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री एन० योगेश मोहली ने भी की जिन्होंने बाढ़ में सिरुगुप्पा क्षेत्र का दौरा किया। श्री कृष्ण मूर्ति का मकान तथा लगभग 15 एकड़ खेती बाढ़ से नष्ट हो गई।

2. श्री डी० कृष्ण मूर्ति ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए 104 व्यक्तियों की प्राण रक्षा में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया है।

8. श्री शंकर दुर्गाया नायक,  
कासरगोड हुबली,  
होन्नावर तालुक,  
जिला उत्तर कन्नड़,  
कर्नाटक।

31 अगस्त, 1993 को कोंकण रेलवे लाइन के निर्माण कार्य पर लांसन एण्ड टुब्रो कम्पनी द्वारा रोजगार पर लगाए गए 17 श्रमिक टनल के लिए ग्राउण्ड शाफ्ट के प्रबलन हेतु धरातल से 16 मीटर नीचे एक कुएं की खुदाई कर रहे थे। खुदाई के काम के लिए प्रयोग में लाया गया शाफ्ट अचानक टूट गया और टनल साढ़े तीन मीटर तक बैठ गया जिसमें 9 श्रमिक दब गए। तीन श्रमिक जो मौत के मुंह से बच गए तुरन्त ही अपने साथी श्रमिक श्री दामोदर मंजैय्या नायक जो आधा दबा हुआ था, को बाहर निकाल दिया। बाद में श्री दामोदर मंजैय्या के साथ तीन श्रमिकों ने अपने चार साथियों की जानें बचाई।

2. श्री शंकर दुर्गाया नायक ने अपने दो अन्य साथियों के साथ अपने प्राणों के लिए गम्भीर खतरे की परवाह न करते हुए चार व्यक्तियों की जानें बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

9. श्री शिवप्पा नीलप्पा मादीवलार,  
पो० : चिक्काकुरवती,  
तालुक : रेनवेलूर,  
जिला : धारवाड़,  
कर्नाटक।

16 अगस्त, 1993 को चिक्काकुरवती (धारवाड़ जिला) के कुछ ग्रामीण नदी पार स्थित वासवेश्वर मन्दिर के दर्शन हेतु हंराकुरवती गांव जाने के लिए नौका में बाहुग्रस्त तुंगभद्रा नदी पार कर रहे थे। चूंकि नौका में भीड़ अधिक हो गई थी इसलिए यह डगमगाने लगी और यात्रियों में भगदड़ मच गई। ऐसे में तीन महिलाएं नदी में गिर पड़ीं और डूबने लग गयीं। श्री शंकर गौड़ा ने इन तीन असहाय महिलाओं को डूबने से बचा लिया और नौका नदी के दूसरे किनारे की ओर चल पड़ी। श्री एम० एन० मादीवलार जो नदी के किनारे के पास ही भेड़ें चरा रहा था, ने डगमगाती नौका में पांच अन्य यात्रियों को अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष करते हुए देखा। वह तुरन्त ही नदी में कूद पड़े और तैरते हुए उस स्थान पर पहुंच कर नौका को पकड़ लिया तथा अपनी पूरी ताकत लगा कर उसे किनारे पर ले आए और इस तरह से पांचों यात्रियों की जान बचा ली।

2. श्री शिवप्पा नीलप्पा मादीवलार ने अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए पांच व्यक्तियों की प्राण रक्षा में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया है।

10. श्री थिमप्पा मन्जु गौड़ा,  
कासरगोड हुबली,  
होन्नावर तालुक,  
जिला उत्तर कन्नड़,  
कर्नाटक।

31 अगस्त, 1993 को कोंकण रेलवे लाइन के निर्माण कार्य पर लांसन एण्ड टुब्रो कम्पनी द्वारा रोजगार पर लगाए गए 17 श्रमिक टनल के लिए ग्राउण्ड शाफ्ट के प्रबलन हेतु धरातल से 16 मीटर नीचे कुएं की खुदाई कर रहे थे। खुदाई के काम के लिए प्रयोग में लाया गया शाफ्ट अचानक टूट गया और टनल साढ़े तीन मीटर तक बैठ गया जिसमें 9 श्रमिक दब गए। तीन श्रमिक जो मौत के मुंह से बच गए, ने तुरन्त ही अपने साथी श्रमिक श्री दामोदर मंजैय्या नायक जो आधा दबा हुआ था, को बाहर निकाल दिया। बाद में श्री दामोदर मंजैय्या के साथ तीन श्रमिकों ने अपने चार साथियों की जानें बचाई।

2. श्री थिमप्पा मन्जु गौड़ा ने अपने दो साथियों के साथ अपने प्राणों के लिए गम्भीर खतरे की परवाह न करते हुए चार व्यक्तियों की जानें बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

11. श्री के० सी० गोपालन,  
कोचुतेवन वीडु,  
वेमनी एराम,  
वेमनी डाकघर,  
बेंगलूर, अलपुजा जिला,  
केरल।

26 अप्रैल, 1993 को साढ़े ग्यारह वर्ष का अजी एस० जी० नाम का एक बालक गांव वेमनी कोचुतेवन कडावू में अचनकोविल नदी तट पर अपनी मां के साथ स्नान कर रहा था। दुर्भाग्य से लड़के को तेज धार और भंवर बहाकर ले गए। इस स्थान पर नदी 25 फुट गहरी और लगभग 100 फीट चौड़ी है। लड़के की मां ने शोर मचाया। यह देखकर श्री के० सी० गोपालन, एक देसी नौका चालक, जो कि उस गांव का था, तुरन्त अपनी नाव के साथ उस स्थल पर चल पड़ा। उसने नदी में छलांग लगा दी और बालक को बचा लिया। तब तक वह बालक बेहोश हो गया था। उसे तत्काल नजदीक के अस्पताल ले जाया गया, जहां वह बाध में स्वस्थ हो गया।

2. श्री के० सी० गोपालन ने अपनी जान की परवाह किए बगैर बालक की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता दिखाई है।

12. श्री के० विनोद,  
पडिटावतू किष केतिल,  
पटिचूर पूर्व,  
झाकषर किरीकाडू,  
कार्तिकापली तालुक,  
जिला अलपुञ्जा,  
केरल ।

4 दिसम्बर, 1993 को श्री ए० मोहन कुमार (39 वर्ष) दुर्घटना, पानी निकालने के लिए पर्युक्त गहरी और रस्सी को ठीक करते समय कुए में गिर पड़े। वह कुआँ लगभग 30 फीट गहरा था और इसमें पानी का स्तर 12 फीट था। उस स्थान पर इकट्ठा हुए लोगों ने उस असहाय व्यक्ति को बचाने के प्रयास किए, परन्तु वे सफल नहीं हुए। इस हालत में, श्री विनोद सामने आए और तुरन्त ही लोगों से रस्सी ली और उनकी सहायता से कुए में उतर गए। पानी के स्तर तक पहुँचने पर उन्होंने मोहन कुमार को रस्सी में बांध दिया और ऊपर उपस्थित लोगों से रस्सी खींचने को कहा, जिससे डूबते हुए व्यक्ति की जान बचा ली गई।

2. श्री के० विनोद ने अपनी जान जोखिम में डालकर कुए में डूबते हुए व्यक्ति की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस तथा तत्परता दिखाई है।

13. श्री एस० अनिकुट्टनर,  
टंकामणि निवास (कावम मुथम),  
कल्लाडी मुथम, मनकाड,  
झाकषर तिरुवनन्तपुरम,  
केरल ।

10-10-1992 को भारी वर्षा के कारण कर्मणा तथा किल्ली नदियों और त्रिवेन्द्रम शहर में बाढ़ आ गई। जिसके परिणामस्वरूप, श्री पंकजाक्षण, अम्बलतारा की कोपड़ी टूट कर बाढ़ में बह गई। श्री पंकजाक्षण तथा उनकी 13 वर्षीय पुत्री कुमारी शीजा नदी पार करते समय बाढ़ में फँस गई और डूबने लगे। नदी किनारे पर कई लोगों ने यह घटना देखी परन्तु उन्हें बचाने के लिए कोई भी आगे नहीं आया। इसे देखकर श्री अनिकुट्टन जो नदी किनारे पर खड़े थे, नदी में कूद पड़े और तैर कर उस जगह पर पहुँच गये तथा एक-एक करके दोनों डूबते हुए को किनारे पर ले आए। बचाव के इस कार्य में श्री अनिकुट्टन पूरी तरह से हाँफ गए और बेहोश हो गए परन्तु बाढ़ में स्वस्थ हो गए।

2. श्री अनिकुट्टन ने अपनी जान की परवाह न करते हुए दो व्यक्तियों की जानें बचाने में उत्कृष्ट साहस एवं तत्परता दिखाई है।

14. श्री आर० गंगाधरन नायर,  
मन्नाडिकविल हाऊस,  
माट्टम उत्तर,  
पो०ओ० तट्टारामपालम,  
मन्नैलिकार, कोलम जिला,  
केरल ।

29-6-1992 को रणजीत (12 वर्ष) तथा अरुण कुमार (7 वर्ष) नाम के दो भाई अपने घर के समीप स्नान करने एक तालाब में गए। इस तालाब का क्षेत्रफल 280 वर्ग मीटर तथा गहराई 10 फुट है। दुर्घटना-वश छोटा भाई गहरे तालाब में फिसल गया। उसका बड़ा भाई उसे बचाने के लिए तालाब में कूद गया। उन्हें तैरना नहीं आता था इसलिए वे डूबने लग गए। उसी समय संयोगवश श्री गंगाधरन नायर, मन्दिर का चौकीदार जो वहाँ पर मौजूद था, ने बालकों को संघर्ष करते हुए देखा और अपनी जान की परवाह किए बगैर उन दोनों की जानें बचा लीं।

2. श्री गंगाधरन नायर ने उत्कृष्ट साहस एवं बहादुरी दिखाई और डूबने से बालकों की जान बचा ली।

15. श्री सी० एच० खालिद,  
पुत्र श्री सी० एच० अब्दुला,  
बगोड हाऊस,  
पो० श्री० तलंगारा,  
जिला कसरगोड,  
केरल ।

28-6-1994 को श्रीमती चन्दावती अम्मा नामक एक वृद्ध महिला देशी नौका में चन्द्रगिरी नदी पार कर रही थी। बाढ़ के कारण लुत्ती नामक स्थान पर नौका उलट गई और श्रीमती अम्मा नदी में गिर पड़ीं। बाढ़ वाली नदी की धार उसे दो कि० मी० तक बहा कर ले गई। उसने सहायता के लिए आवाज लगाई लेकिन कालोनी से जिन लोगों ने उनकी आवाज सुनी कोई भी उसे बचाने के लिए नहीं आया। उसे देखते हुए श्री खालिद (18 वर्ष) पुत्र श्री अब्दुला उस स्थान पर दौड़ पड़े और नदी में कूद कर उफनती हुई नदी में एक कि० मी० तक तैर कर महिला को पकड़ लिया परन्तु पानी की धार उन्हें 1 कि० मी० और आगे बहाकर ले गई। फिर भी श्री खालिद ने एक हाथ से लोगों द्वारा फेंकी गई रस्सी तथा दूसरे हाथ से महिला को पकड़ कर तैरते हुए उसे सुरक्षित लाने में सफलता प्राप्त कर ली।

2. श्री खालिद ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए डूबती हुई महिला की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस तथा तत्परता दिखाई है।



16. श्री एन० के० मोहनन,  
पाणिक्सेरी हाउस,  
मकान नं०-23/1149,  
एडाकोची, कोची-6  
केरल।

27-11-1993 को 68 यात्रियों को ले जा रही नौसेना की एक नौका कोचीन बन्दरगाह पर डकरिन्ज्राइट पर मड़ने समय उलट गई। ऊंची लहरों के कारण दुर्घटना स्थल पर पानी की गहराई लगभग 6 मीटर थी।

2. यह देखकर स्किल ड्राइवर श्री एन० के० मोहनन घटनास्थल की ओर लपके और उन्होंने डूबे हुए तथा बंद-किस्मत किस्ती के बाहर लटके हुए यात्रियों को बचाने के लिए पानी में छलांग लगा दी। इस बचाव अभियान के दौरान वे कई बार तेज गति वाले पानी में कूदे और डूबे रहे तथा फँसे हुए यात्रियों को एक-एक करके सुरक्षित बचा लिया। डूबकी लगाते समय उन्होंने देखा कि किस्ती के कैबिन में 6 आदमी फँसे हुए हैं और उन्होंने तत्काल कैबिन के गति-का पैनल तोड़ डाला और एक-एक करके उन व्यक्तिओं को बाहर निकाल लाए। अपने इस साहसिक बचाव कार्य में वह पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों सहित कुल 19 व्यक्तियों की जान बचाने में सफल रहे।

3. श्री एन० के० मोहनन ने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना 19 व्यक्तियों के प्राण बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

17. श्री बी० प्रकाश,  
पन्तुविला वीडू, अनमकालू,  
डाक-पुष्पकन्धम,  
ग्राम-पराथोडू,  
उडुम्बाम्बोला तालुक,  
इडुक्की जिला, केरल।

14-11-1992 को भारी वर्षा और फिमलन के कारण ग्रामपराथोडू, उडुम्बाम्बोला तालुक, इडुक्की जिला, केरल में बाढ़ आ गई थी जिसके परिणामस्वरूप श्रीमती एलिस, पत्नी श्री जॉसेफ, समेत 5 व्यक्ति मारे गए। निकटवर्ती ऊंची पहाड़ी से निकली पानी की बाढ़ ने पानी की धारा के प्रवाह को भयंकर रूप दे दिया और साथ ही भू-स्थलन से बाढ़ की स्थिति और बिगड़ गई। श्रीमती एलिस अपने बच्चों जॉबी (13 वर्ष) और जॉसी (11 वर्ष) समेत बाढ़ की प्रचण्ड धारा में बह गई। यह देखकर श्री बी० प्रकाश अपनी जान के खतरे की परवाह किए बिना नदी की तेज धारा में नूद पड़े और दोनों बच्चों को बचा लिया, हालांकि वे श्रीमती एलिस को नहीं बचा पाये। इस बहावुरीपूर्ण कार्य में श्री प्रकाश को गम्भीर चोटें आयीं और उन्हें नेडुम्कन्दम में कठुणा अस्पताल में दाखिल करा दिया गया जहाँ 15 से भी अधिक दिन तक उनका इलाज चलता रहा।

2. श्री बी० प्रकाश ने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना दो बच्चों की जान बचाने में अवश्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

18. श्री पी० साजी पुत्र श्री पप्पाचन,  
भाजेबोटातिल पुतेनु वीडू,  
पिडावुर डाकघराना,  
पिडावुर ग्राम,  
पथनपुरम तालुक,  
कोल्लम जिला, केरल।

19-3-94 को ग्राम पिडावुर में 'कल्लड' नदी में मुल-तकडु स्नान घाट पर श्री वेणुगोपाल (33 वर्ष) और उनकी पत्नी श्रीमती गीता (29 वर्ष) स्नान कर रहे थे। स्नान करते समय श्रीमती गीता भंवर में फँस गई जिसे 'पुलिकयम' कहा जाता है जो स्नानघाट के नीचे स्थित था। यह देख कर श्री वेणुगोपाल ने उनको बचाने का प्रयास किया, लेकिन वे स्वयं भी भंवर में फँस गये और डूबने लगे। स्नानघाट पर लोगों की चीख-पुकार सुनकर श्री पी० साजी घटनास्थल की ओर दौड़े और लगभग 50 फीट गहरे पानी में कूद गये और उन इम्पति को डूबने से बचा लिया।

2. श्री साजी ने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना इम्पति के प्राण बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

19. मास्टर पी० बी० मुजेश कुमार,  
पुत्र श्री चेळुकुनन मुकुमरन,  
डाक-बेंगारा, मर्दई गाँव,  
कन्नूर जिला, केरल।

13-10-1993 को कुएं में पानी निकालने समय बेंगरा हिल्स एल०पी० स्कूल का छात्र मास्टर पी० पी० रंजू (9 वर्ष) प्रचारक कुएं में जा गिरा। लगभग 20 फीट कुएं में लगभग 15 फीट पानी था। मास्टर रंजू को तैरना नहीं आता था। उस अग्रहाय बच्चे की दुर्घना को महसूस करते हुए उसी स्कूल के छात्र मास्टर पी० बी० मुजेश कुमार (9 वर्ष) ने कुएं में छलांग लगा दी और मास्टर रंजू को डूबने से बचा लिया।

2. मास्टर पी० बी० मुजेश कुमार ने अपनी जान की खतरे की परवाह किए बिना मास्टर रंजू को डूबने से बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

20. श्री पी० पी० सुरेश बाबू,  
पुत्र श्री पाराम,  
अरीपरम्ब,  
मुलावकड, पत्नीकुलम जिला, केरल।

4-10-1992 को एक मेडिकल रिजर्जेंट्स श्री वेणुगोपाल सपरिवार कोचीन अग्रवाही जल में भ्रमण कर रहे

थे। जब नाब सैनिका जेटी विमन के पास आ रही थी तो श्री वेणुगोपाल का आठ माह का बेटा अचानक फिसलकर पानी में गिर पड़ा। उस स्थल पर पानी 2.5 मीटर गहरा था। बच्चे को बचाने के लिए श्री वेणुगोपाल पानी में कूद पड़े लेकिन वाप बेटा दोनों डूबने लगे। यह देख कर श्री सुरेश बाबू अपनी जान हथेली पर रख कर पानी में कूद पड़े और उन दोनों को बचा कर सुरक्षित निकाल लाए।

2. श्री सुरेश बाबू ने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना दोनों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

21. श्री थॉमस बर्मीस,  
मतिमलापरमिल,  
थन्निथोडू पी० ओ०,  
थन्निथोडू मूडी,  
पथनमिडिट्टा जिला,  
केरल।

10-10-1992 को मानसून के दौरान भारी वर्षा के कारण थन्निमुडू क्षेत्र में बाढ़ आ गई। जल स्तर अचानक बढ़ गया और 3 बजे सुबह तक नदी किनारे स्थित श्रीमती लिप्पी बाबू का मकान धीरे-धीरे बहने लगे बाढ़ के पानी में जलमग्न हो गया। परिणामस्वरूप दो बच्चों समेत श्रीमती लिप्पी बाबू का 7 सदस्यों का परिवार अमहाय होकर घर के अन्दर ही पस गया। परिवार के सदस्यों ने सहायता के लिए जोर-जोर से चीख-पुकार की। सहायता के लिए उनकी चीख-पुकार सुनकर उनका पड़ोसी थामस बर्मीस तैर कर उनके घर की तरफ आया और पिछला दरवाजा तोड़कर घर में घुस गया। इस प्रकार उसने एक एक करके 7 सदस्यों के पूरे परिवार को बचा लिया।

2. श्री थॉमस बर्मीस ने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना 7 व्यक्तियों के प्राण बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

22. श्री शिव प्रसाद केवट,  
ग्राम व डाक-अंजोरा,  
तहसील व जिला-दुर्ग,  
मध्य प्रदेश।

19-10-1992 को श्री शिव प्रसाद केवट ने जो अपनी बाइसाइकिल से माछरी लेबने के लिए अपने गांव अंजोरा से दुर्ग जा रहे थे, देखा कि एक माछरी बैन अचानक नियंत्रण खोकर शिव साध नदी में जा गिरी। श्री केवट तत्काल गहरा नदी में कूद पड़े और बैन का पिछला दरवाजा खोल दिया। श्री केवट ने कुछ अन्य व्यक्तियों की सहायता से बैन में फंसे सभी 6 व्यक्तियों को बाहर निकाल लिया। तथापि, दो महिलाओं समेत केवल तीन व्यक्तियों की जान बचायी जा सकी।

2. श्री शिव प्रसाद केवट ने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना 3 व्यक्तियों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

23. श्री विष्णु प्रसाद केवट (मरणोपरांत),  
ग्राम व डाक-अंजोरा,  
तहसील व जिला-दुर्ग,  
मध्य प्रदेश।

12-7-1994 को जिला दुर्ग में शिवसाध नदी में आयी भारी बाढ़ में नदी किनारे रहने वाले 34 व्यक्ति फंसे गये थे। श्री विष्णु प्रसाद केवट अपने दो अन्य साथियों के साथ बचाव कार्य में जुट गये। श्री केवट ने टुक की रस्मियों से एक खारपाई को चार मीटर दूबों से बांध दिया। रस्मियों के दूसरे सिरे को पकड़ मजबूत करने के लिए पेड़ों से बांध दिया। उन्होंने टेलीफोन के तारों का भी प्रयोग किया और स्वयं के तथा अपने साथियों की जान को भारी खतरे में डालकर 8 से 12 आदमियों की जान बचा ली। दूसरों के प्राण बचाने के अपने प्रयास में और मोटर दूब में पंचर हो जाने के कारण श्री केवट का हाथ रस्मी और टेलीफोन के तार से फिसल गया जिसके परिणामस्वरूप वह तेज धारा के प्रवाह में बह गया। बाद में उनका जब नदी में बरामद किया गया।

2. श्री विष्णु प्रसाद केवट ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा को बिल्कुल नजरअंदाज करते हुए अनुकरणीय साहस और मानव जीवन के प्रति उत्कृष्ट सम्मान का परिचय दिया। उन्होंने कई लोगों के प्राण बचाये और इस प्रक्रिया में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

24. श्रीमती दमयंती बापू मलूमरे,  
मुकाम व डाकघर-उमले,  
तालुक बसई,  
जिला-थाणे,  
महाराष्ट्र।

15-11-1991 को पांच वर्षीय मास्टर चिराग राजेन्द्र बर्तक एक महिला के साथ हो लिया जो गांव उमले तालुका बसई जिला थाणे में उमले झील पर कपड़े धोने के लिए जा रही थी। जब वह महिला कपड़े धो रही थी तो मास्टर बर्तक अचानक झील में गिर गया और झील के किनारे से 25 से 30 फीट तक बहता चला गया और डूबने लगा। झील पर मौजूद अन्य महिलाएं सहायता के लिए चीखने-चिल्लाने लगीं। श्रीमती दमयंती बापू मलूमरे ने जो झील के किनारे रहती थी, महिलाओं, औरतों की चीख-पुकार सुनी और वह तत्काल झील की तरफ दौड़ी आयी। झील के पानी में बच्चे को डूबता देखकर वह तुरन्त झील में कूद गयी और डूबने हुए बच्चे की तरफ तैरने लगी। उन्होंने बच्चे का हाथ पकड़ लिया और उसे झील के किनारे ले आयी। बच्चे को बचाने के इस प्रयास में उन्हें कुछ मामूली चोटें भी आयीं।

2. श्रीमती बसन्ती बापू मलूमरे ने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बिना डूबते हुए बच्चे की प्राण बचाने में अदम्य साहस व तत्परता का परिचय दिया।

25. कुमार ध्यानेश्वर डागडू डुले,  
ग्राम व पोस्ट—कड्डे बत्तले,  
तालुका—खेड, जिला—पुणे,  
महाराष्ट्र।

28-8-1992 को गांव बत्तले तालुका खेड, जिला—पुणे के लड़के-लड़कियों का एक समूह "भीमा" नदी के दूसरे छोर पर स्थित अपना स्कूल में बापम लौट रहा था। नदी पार करने के लिए छात्र प्रायः एक डोंगी का प्रयोग किया करते थे। उस दिन उन्हें डोंगी नदी किनारे पर नहीं मिली। तथापि, 6 लड़कों ने कम गहराई वाले स्थान में नदी को पार करने का निश्चय किया। वे नदी में घुसे और एक दूसरे का हाथ पकड़कर एक शृंखला बनाकर नदी के दूसरे किनारे पर पहुँच गये। उस लड़कों को नदी को पार करते देखकर 5 लड़कियों ने भी उसी तरह से नदी को पार करने का निश्चय किया। ऐसा करते हुए वे अनजाने में गहरे पानी में प्रविष्ट हो गयीं। तब एक लड़की अपना नियंत्रण खो बैठी और उसकी किताबें पानी में गिर गयीं। जैसे ही वह किताबें उठाने के लिए झुकी, हाथों की शृंखला टूट गई और सभी 5 लड़कियाँ छाती तक गहरे पानी में गिर गईं और डूबने लगीं।

2. नदी के दूसरे किनारे पर खड़े कुमार ध्यानेश्वर डागडू डुले और कुमार संतोष आनन्द शिंदे तुरन्त पानी में कूद पड़े और तैरते हुए लड़कियों की ओर बढ़ने लगे और उन्होंने कुमारी अरुणा नायकड और कु० ऊषा जाधव को पकड़ लिया और लगभग 30 फुट तक पानी में खींचकर नदी के किनारे पर ले आये। वे फिर से पानी में कूद गए और बाकी लड़कियों की ओर तैरने लगे तथा कु० राजश्री और कु० नंदा को पकड़ लिया तथा उन्हें भी उसी प्रकार किनारे तक ले आये। तथापि, कु० बंधना शान्ताराम नायकड नदी में बह गई। उसे भी बचाने हेतु दोनों लड़कों के प्रयास निष्फल हो गये और उसका शव दो दिन बाद 15 किलो मीटर दूर मोहोर ताला में पाया गया।

3. कुमार ध्यानेश्वर डागडू डुले ने कुमार संतोष आनन्द शिंदे के साथ मिलकर, अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए 4 लड़कियों को डूबने से बचाने में अदम्य साहस, समझबूझ और तत्परता का परिचय दिया।

26. कुमार संतोष आनन्द शिंदे,  
मुकाम व डाकघर—कड्डे बत्तले,  
तालुका—खेड, जिला—पुणे,  
महाराष्ट्र राज्य।

28-8-1992 को ग्राम बत्तले, तालुका—खेड, जिला—पुणे के लड़के व लड़कियों का एक गुप "भीमा" नदी की

दूसरी ओर स्थित अपने स्कूल में लौट रहे थे। छात्र ग्राम तीर पर नदी पार करने के लिए डोंगी का इस्तेमाल करते थे। उस दिन उन्हें नदी के किनारे पर कोई डोंगी नहीं मिली। छः लड़कों ने नदी को कम जल स्तर वाले स्थान में पार करने का निर्णय किया। उन्होंने एक दूसरे का हाथ पकड़कर जेन बनते हुए नदी में प्रवेश किया और नदी के तूफानी किनारे पर पहुँच गए। लड़कों को नदी पार करते देखकर पाँच लड़कियों ने भी उनका अनुसरण करना चाहा और ऐसा करते समय वे अज्ञानवश गहरे पानी में चली गईं। उन लड़कियों में से एक लड़की अपना नियंत्रण खो बैठी और अपनी पुस्तकें पानी में गिर गईं। जैसे ही वह लड़की अपनी पुस्तक उठाने के लिए नीचे झुकी, हाथों को पकड़ कर बनाई गई जेन टूट गई और पाँचों लड़कियाँ छाती तक गहरे पानी में गिरकर डूबने लगीं।

2. कुमार संतोष आनन्द शिंदे और कुमार ध्यानेश्वर डागडू डुले, जो नदी की दूसरी ओर थे, तत्काल पानी में कूद पड़े और लड़कियों की ओर तैर कर कुमारी अरुणा नायकड व कुमारी ऊषा जाधव को पकड़कर पानी में लगभग 30 फुट तक तैर खींच कर नदी के किनारे लाने में सफल रहे। वे फिर पानी में कूदें और गेप लड़कियों की ओर तैर कर कुमारी राजश्री तथा कुमारी नंदा को भी उसी प्रकार से पकड़ कर नदी के किनारे तक ले आए। यद्यपि कुमारी बन्धना शान्ताराम नायकड बह गई। दोनों लड़कों के उसे बूझने के प्रयास निरर्थक रहे और दो दिन परबाव मोहोर ताले में 15 कि० मीटर की दूरी पर उसका शव पाया गया।

3. कुमार संतोष आनन्द शिंदे और कुमार ध्यानेश्वर डागडू डुले ने अपने जीवन के जोखिम की परवाह न करते हुए चार लड़कियों का जीवन बचाने में अदम्य साहस, समझबूझ व तत्परता का परिचय दिया।

27. श्री बसन्त ध्यानेश्वर माने,  
मुकाम व डाकघर—बेलापुर,  
तालुका—मालवीरास,  
जिला—गोलापुर,  
महाराष्ट्र।

7-11-1992 को "दीपावली तुलसी विवाह" के दिन लगभग 11 बजे रात्रि बेलापुर में श्री बन्नात्रेय महादेव चन्दनशिव की झोंपड़ी में दुर्घटनावश आग लग गई। श्री चन्दनशिव के 3, 7 और 9 साल के तीन छोटे-छोटे बच्चे को झोंपड़ी में सोये हुए थे, आग में फँस गए। जिस समय झोंपड़ी में आग लगी उस समय श्री चन्दनशिव और उनकी पत्नी वहाँ मौजूद नहीं थे। यह देखकर उनके पड़ोसी श्री बसन्त ध्यानेश्वर माने तेजी से झोंपड़ी के अन्दर घुसे, जो तब तक चारों ओर से आग पकड़ चुकी थी। वे मकलतामूक बच्चों को जलती हुई झोंपड़ी से बचा कर ले आए। इसी क्रम में श्री माने का दाहिना हाथ भी झुलस गया।

2. श्री वसन्त ध्यानेश्वर माने ने अपनी जान के प्रति गंभीर जोखिम की परवाह किए बिना तीन बच्चों को जिन्दा जलने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

28. श्री गोविंदागा,

पुत्र श्री गोविंदागा रामराव,

विंग तगागा साइजिली जंगल,

मिर्जाराम।

16-6-93 का जब भारी बाढ़ हो रही थी और व्यक्ति जाश्वरी नदी को पार कर रहे थे। उन ग्रुप के तीन व्यक्तियों ने मृण्मल से नदी पार की ही थी कि बहुत जबरदस्त बहाव के साथ जोरदार बाढ़ आ गई और उस ग्रुप की चौथी सदस्या श्रीमती लालपियानी उसमें घिर गई और बहाव के साथ बहने लगी। यह देखकर श्री गोविंदागा पुत्र श्री लालत्वागा जो नदी तट के दूसरी तरफ श्री भवरदार पानी में कूद पड़े और उसे पकड़ने और तैर कर सुरक्षित नदी तट पर ले जाने में सफल रहे और इस प्रकार श्रीमती लालपियानी को निश्चित मृत्यु से बचा लिया। श्रीमती लालपियानी जो इस दौरान बेहोश हो गई थी, तट पर पहुंचने के बाद होश में आयी।

2. श्री गोविंदागा ने अपनी जान के प्रति गंभीर खतरे की परवाह किए बिना एक महिला की जान डूबने से बचाने में अदम्य साहस और पहलुशक्ति का परिचय दिया।

29. मास्टर सी० जोगहाका

पुत्र श्री हरशियागा

मुआल्लियानपुई,

मुगुलई जिला मिर्जाराम।

23-6-1994 का मुआल्लियानपुई गांव के श्री लालदुहलिरा (32 वर्ष) और एक नाबालिग लड़का (14 वर्षीय) मास्टर सी० जोगहाका दावा ही अपने बूम से घर लाट रहे थे। जिस रास्ते से वे आ रहे थे वह पहाड़ी भूभाग से होकर गुजरता था।

2. रास्ते में श्री लालदुहलिरा दुर्घटनावश फिसल गए और लुढ़कते हुए नीचे तूईपुई नदी में जा गिरे। वे धीरे-धीरे नदी के बहाव के साथ बहने लगे थे और अपने आपको बचाने में नाकाम हो रहे थे। श्री लालदुहलिरा की यह दुर्दशा देखकर मास्टर सी० जोगहाका बिना समय गवाए नदी की ओर दौड़े और उसमें कूद पड़े और अपनी पूरी शक्ति से श्री लालदुहलिरा को तट तक खींच लाए और उन्हें जमीन पर लिटा दिया। मास्टर जोगहाका बिना समय गवाए दुर्घटनास्थल से 5 कि० मी० की दूरी पर स्थित अपने गांव की ओर भागे हुए गए और अपने साथ ग्रामवासियों को बुला कर ले आए जो श्री लालदुहलिरा को घर ले गए और बाद में इलाज के लिए उन्हें अस्पताल में दाखिल करा दिया।

3. मास्टर सी० जोगहाका ने अपनी जान के प्रति जोखिम की परवाह किए बिना एक आदमी की जान डूबने से बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

30. मास्टर आनन्द कुमार प्रधान,

पुत्र श्री गंगाधर प्रधान,

ग्राम मुनिआपरा,

थाना बोलागढ़,

जिला—खुर्दा, उड़ीसा।

24-10-1993 का एक नाटक के अभ्यास में भाग लेने के बाद अपने घर लौटते वक्त मास्टर आनन्द कुमार प्रधान ने दण्डपाणी साहू नाम के एक युवा व्यक्ति की शिव मन्दिर के नाम से जाने वाले एक मन्दिर के निकट तालाब में डूबते हुए देखा। श्री दण्डपाणी की हालत बहुत दयनीय थी और वे मदद के लिए चिल्ला भी नहीं पा रहे थे। यह देखकर मास्टर आनन्द प्रधान अपनी तन्ही उम्र (साढ़े छः वर्ष) के बाबजूद नदी में कूद पड़े और डूबते हुए व्यक्ति के पास गए और उसे तालाब के किनारे तक खींच लाए।

2. मास्टर आनन्द कुमार प्रधान ने अपनी जान के प्रति गंभीर खतरे की परवाह किए बिना एक युवा व्यक्ति को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

31. मास्टर साबिर अली,

पुत्र श्री अकबर अली,

ग्राम व डाकघर साबर,

तहसील चैकड़ी,

जिला—अजमेर,

राजस्थान।

11 सितम्बर, 1992 का मास्टर सुभाषित अमरपाल (12 वर्ष) अपनी दादी के साथ गांव के एक तालाब में नहाने के लिए गया। तालाब की लम्बाई लगभग 1000 फुट और चौड़ाई 600 फुट थी और उसमें 10—12 फुट गहरा पानी था। जब दादी कपड़े धोने में व्यस्त थी तो मास्टर सुभाषित खेलते हुए दुर्घटनावश गहरे पानी में जा गिरा और डूबने लगा। मास्टर सुभाषित को आम-पास न देखकर दादी ने शोर मचाया। उनका चिल्लाना सुनकर मास्टर साबिर अली दुर्घटना स्थल का ओर दौड़े और महिला के इशारे पर गहरे पानी में कूद पड़े। गहरे पानी में कई बुकियां लगाने के बाद उन्होंने मास्टर सुभाषित को कूड़ निकाला जो तब तक बेहोश हो चुके थे। मास्टर साबिर अली ने लड़के को पकड़ लिया और उसे सुरक्षित जगह पर ले आए। प्राथमिक उपचार के बाद सुभाषित को अस्पताल ले जाया गया।

2. मास्टर साबिर अली ने अपनी तन्ही उम्र के बाबजूद अपनी जान के प्रति जोखिम की परवाह किए बिना

एक बच्चे की जान डूबने से बचाने में अदम्य साहस और नतपरता का परिचय दिया।

### 32. श्री श्याम सिंह सालंकी

ग्राम ब डाकघर—सारमाप

तहसील ब जिना—मन्दाई गांधीपुर,

राजस्थान।

12 जुलाई, 1993 को बिलासपुर बन्द में पानी अधिक भर जाने के कारण उसके फाटकर खोलने की वजह से बिलास नदी में बाढ़ आई हुई थी। एक विद्यार्थी राम अवतार जो अपने गांव लौट रहा था, सवाई माधोपुर—जयपुर रेलवे लाइन का पुल पार करते समय भव्यभूत पानी में फंस गया और बहाव के साथ बहने लगा। पुल पर खड़े लोग इस घटना से हैतप्रत रह गए लेकिन किसी ने भी मदद के लिए आगे आने की हिम्मत नहीं की। इन परिस्थितियों में श्री श्याम सिंह सालंकी ने हिम्मत जुटाई और वे नदी में कूद पड़े, सड़क की तलाश की और उसे सुरक्षित स्थान तक लाकर उसकी जान बचाई।

2. श्री श्याम सिंह सालंकी ने अपनी जान के प्रति खतरे का परवाह किए बिना श्री राम अवतार की जान डूबने से बचाने में अदम्य साहस और नतपरता का परिचय दिया।

### 33. कुमारी स्वाती खंडेलवाल,

मुपुत्री श्री शंकरलाल खंडेलवाल,

प्लॉट नं० 47,

दुर्गा विहार, दुर्गापुरी,

जयपुर, राजस्थान।

13 अप्रैल, 1993 को 10 वर्षीय कुमारी स्वाती खंडेलवाल, एक 'होज' के नजदीक खेल रही थी। इस होज की लम्बाई और चौड़ाई 10 × 6 तथा गहराई 10 फुट थी और यह ऊपर तक पानी से भरा हुआ था। दो अन्य बच्चे भी जो होज के निकट खेल रहे थे, दुर्घटनावश इसमें गिर पड़े और सहायता के लिए चिल्लाने लगे। कुमारी स्वाती, जो इस घटना के मौके पर मौजूद थी, ने पहल की और उसने अपने दोनों हाथ और पाँव पूरी लम्बाई तक फैला कर दोनों बच्चों को होज के बाहर खींच लिया और उन्हें बचाने में सफल रही।

2. कुमारी स्वाती खंडेलवाल ने अपनी तन्ही उम्र के बावजूद दो बच्चों की जान डूबने से बचाने में साहस और नतपरता का परिचय दिया।

### 34. श्री अमीर अहमद

(मरणोपरान्त)

मोहल्ला—रद,

ग्राम ब थाना-टांडा,

तहसील—सवार,

जिला—रामपुर,

उत्तर प्रदेश

मिन्सबर, 1993 के पहले और दूसरे मन्दाई के दौरान तहसील सवार में धारील बाँध में बरार के कारण अचानक बाढ़ ते रामपुर जिले के 495 गाँव प्रभावित हुए थे। फगे हुए लोगों का बचाने में ग्राम जनता सहित अनेक सरकारी एजेंसियाँ लगी हुई थीं। 14 मितम्बर, 1993 को लगभग 3.30 बजे साँय श्री अमीर अहमद, पुत्र श्री अब्दुल रशीद, जो एयर-फ़्लड ट्यूब का प्रयोग करके बचाव कार्यों और राहत सामग्री के वितरण में लगे हुए थे, कौम नदी के तेज बहाव के कारण अचानक बह गए और बह डूब गए।

2. श्री अमीर अहमद ने मानवीय कार्य के लिए अनुकरणीय साहस और कर्तव्य—निष्ठा का परिचय दिया और इस प्रक्रिया में अपने प्राणों की बलि दे दी।

### 35. मास्टर अमिन हांडा,

पुत्र श्री जगवीर हांडा,

मनखोडा रोड,

बिलासपुर शहर, जनपद रामपुर,

उत्तर प्रदेश।

मास्टर अमिन हांडा, जो दयावती मोदी अकादमी, मोदीपुर के 10वीं कक्षा के विद्यार्थी, स्कूल के अन्य विद्यार्थियों के साथ मैटाडोर बैन द्वारा बिलासपुर में रोजाना आया—जाया करते थे। 29.8.1993 को वह अन्य विद्यार्थियों के साथ आम दिनों की तरह स्कूल आए परन्तु उसी वाहन से वापस लौट गए क्योंकि उस दिन स्कूल बंद था। पहाड़ी गेट पहुँचने पर, मैटाडोर के ड्राइवर ने हरियाणा रोडवेज की खड़ी हुई बस से गुजरते समय ब्रेक लगाने का प्रयास किया, जिसमें कुछ यात्री सवार थे, लेकिन ब्रेक नहीं लगी और मैटाडोर ने बस पर सवार होने हुए एक यात्री को, जिसकी गोद में बच्चा था, टक्कर मार दी। बच्चा और यात्री दोनों सड़क पर गिर पड़े। इन घटनाओं से घबड़ाकर और यह सोचते हुए कि बच्चे की मृत्यु हो गई है, ड्राइवर वाहन को लेकर भाग गया। तथापि, हरियाणा रोडवेज की बस ने उस मैटाडोर का पीछा किया मैटाडोर का ड्राइवर डर गया और चलते हुए वाहन से कूद गया तथा चाननपुर गाँव की सड़क की ओर भागा। मास्टर तपेन्द्र सिंह, पुत्र श्री जगरूप सिंह जो ड्राइवर की मोट के पीछे बैठा हुआ था, ने स्टीयरिंग व्हील संभाल लिया, बत्ती जला दी तथा गीयरस का प्रयोग करके वाहन को रोक दिया। मास्टर अमिन हांडा, ने जो मास्टर तपेन्द्र सिंह के साथ उस वाहन में यात्रा कर रहे थे, दूसरी दिशा से आ रहे वाहनों को सड़क के दूसरी ओर चलाने का संकेत दिया ताकि आगे—सामने टक्कर न हो जाए। यदि मास्टर अमिन हांडा ने पहल न की होती तो मैटाडोर दुर्घटनाग्रस्त हो सकती थी,

जितने क्षमते से सफल कर रहे 25 विद्यार्थियों का जीवन खतरे में पड़ जाता।

2. मास्टर अमित हांडा ने 25 विद्यार्थियों का जीवन बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

36. श्री भूपेन्द्र सिंह बिष्ट,

पुत्र श्री लाल सिंह बिष्ट,

प्रेम कुटीर, जाय बिला कम्पाउण्ड, तहसील जाल्म,  
नैनीताल, उत्तर प्रदेश।

19-8-1992 को कुमारी पूषम यादव नाम की 15 वर्षीय बालिका नैनी झील में गिर गई और वह डूब गई थी। श्री भूपेन्द्र सिंह बिष्ट ने उस डूबती हुई लड़की को देखा और बिना किसी विचार के तथा अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए वह झील में कूद गए। उस जगह तैर कर गये और कुमारी यादव को मौत से बचा लिया।

2. श्री भूपेन्द्र सिंह बिष्ट ने अपनी जान की परवाह न करते हुए कुमारी यादव के जीवन को डूबने से बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

37. श्री चन्दन सिंह खानी,

पुत्र श्री खड़क सिंह खानी,

ग्राम-ताखला, डाकघर नायोलोहरा,  
तहसील और जिला—अल्मोड़ा,  
उत्तर प्रदेश।

25.8.1992 को बिजली की एक खट्टन कट मयी और करंट वाली तार राम मंदिर के कम्पाउण्ड में स्थित सरस्वती शिशु मंदिर परिसर में गिरे गई। 3 बच्चे जो अन्य बच्चों के साथ कम्पाउण्ड में खेल रहे थे, वे करंट वाली तार से चिपक गये। यह देखते हुए श्री चन्दन सिंह खानी जो अपने मकान की छत पर खड़े थे, तत्काल बिजली के खंभे पर चढ़े और करंट वाली तार काट दिया जिससे उन अन्य बच्चों को बचाने के अतिरिक्त ये तीन बच्चे श्री बिजली के झटके से बच गये जिन्हें कम्पाउण्ड में खेलते समय करंट वाली तार के साथ सम्पर्क में आने का खतरा था।

2. श्री खानी ने अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए तीन बच्चों को बिजली के झटके से उनके जीवन को बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

38. श्री जगदीश प्रसाद चमोली,

मुपुत्र स्व० श्री बेबीदत्त चमोली,

ग्राम—म्यालकोट पट्टी बचणस्यू,  
तहसील—पीडी, जनपद—गढ़वाल,  
उत्तर प्रदेश।

23.5.1994 को 1.30 बजे गढ़वाल जिले में श्री जगदीश प्रसाद चमोली के घर में एक चीता घुस आया। श्री चमोली ने सूझ-बूझ और साहस के साथ चीते पर हमला किया और उन्होंने चार हथियारों और छड़ी के साथ उस पशु को

मारने में सफलता हासिल की और इस प्रकार उन्होंने अपनी पत्नी और पांच बच्चों की जानें बचा ली।

2. श्री चमोली ने एक चीते के शिकंजे में अपने परिवार के सदस्यों की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

39. श्री मिर्जा हुसैन अब्बास,

मुपुत्र श्री मिर्जा ईशरान हुसैन,

पोपपुर,

भीता प्रेम,

डाकखाना—राजघाट, गोरखपुर,

उत्तर प्रदेश।

1.7.1993 को मुहम्मद जुलूस में भाग ले रहे 12 बच्चे राप्ती नदी के किनारे पर खड़ी एक नाव पर सवार हुए। दुर्भाग्यवश रस्सी की गांठ खुल गई और नाव हिलने लग गई। नदी में धाड़ आई हुई थी, नाव तेज हवा और तेज प्रवाह के कारण मुख्य धारा की ओर चल पड़ी। नौका पर सवार बच्चे भयभीत हो गए और उन्होंने चिल्लाना शुरू कर दिया। यह देखने पर, श्री मिर्जा हुसैन अब्बास अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए नदी में कूद पड़े और घटनास्थल की ओर तैर कर नौका को किनारे की ओर वापिस ले आए और इस प्रकार उन्होंने असहाय बच्चों की जानें बचायी।

2. श्री मिर्जा हुसैन अब्बास ने अपने जीवन के प्रति गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए 12 बच्चों को डूबने से बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

40. श्री सिराज खान,

पुत्र श्री माणूक अली खान,

ग्राम निसवी,

तहसील और पुलिस स्टेशन—मिलक,

जिला—रामपुर,

उत्तर प्रदेश।

31.2.1993 की रात्रि को लदान खान पुत्र श्री बरकतुल्लाह खान, ग्राम निसवी, जिला रामपुर के मकान में आग लग गई। श्री लदान खान और उनका परिवार, जिसमें उनकी पत्नी, पुत्रवधू और उनके दो बच्चे शामिल थे, उस मकान में फंस गए। वे सहायता के लिए चिल्लाए, उनकी तेज चीख—पुकार को सुनकर, उनका पड़ोसी श्री सिराज खान दौड़ा और जलते हुए मकान में चला गया और परिवार को सुरक्षित बाहर ले आया। इस कार्रवाई के दौरान श्री सिराज खान स्वयं गंभीर रूप से घायल हो गए जिसके लिए उन्हें हस्पताल में इलाज के लिए एक सप्ताह रहना पड़ा।

2. श्री सिराज खान ने अपने जीवन के प्रति गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए जलते हुए मकान से पांच व्यक्तियों के जीवन को बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

41. श्री सुशील कुमार पटेरिया (मरणोपरान्त),  
पुत्र श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा,  
12- राय का ताजिया,  
पुलिस स्टेशन - कौनवाली झाली,  
उत्तर प्रदेश।

10.4.1992 को श्री सुशील कुमार पटेरिया झाली शहर में धर्मशाला के तालाब के नजदीक गणेश जी के मंदिर में प्रतिष्ठित मूर्तियों को सजाने के काम में लगे हुए थे। मानसिक रूप से विकृत एक महिला अचानक उस तालाब के गहरे और कीचड़ युक्त पानी में कूद पड़ी और डूबने लगी। श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए मंदिर में एकत्र हुए लोग जोर से चिल्लाने लगे। महायत्नी के किए की गई तेज चीख पुकार को सुनकर श्री सुशील कुमार पटेरिया घटनास्थल की ओर दौड़े और अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए तालाब में कूद गए। लगातार प्रयत्न करने के पश्चात् वह उस डूबती हुई महिला को पिछले स्थान पर लाने में सफल हो गए और उनके जीवन को बचा लिया। लेकिन श्री पटेरिया उस गहरे और कीचड़ युक्त पानी में फंसे जहाँ उन्हें धैर्यशी की हालत में बाहर निकाला गया। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया जहाँ उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

2. श्री सुशील कुमार पटेरिया ने महिला का जीवन बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया। लेकिन इस प्रक्रिया में उन्होंने महान त्याग किया।

42. मास्टर तपिन्द्र सिंह,  
पुत्र श्री जगरूप सिंह,  
मनखोडा रोड,  
विलासपुर टाउन,  
जनपद रामपुर,  
उत्तर प्रदेश।

दयावती मोदी अकादमी, मोदीपुर के दसवीं कक्षा का विद्यार्थी मास्टर तपिन्द्र सिंह स्कूल के अन्य विद्यार्थियों के साथ मेटाडोर वैन द्वारा विलासपुर से रोजाना आता - जाता था। 9.8.1993 को वह अन्य विद्यार्थियों के साथ सामान्य दिनों की तरह स्कूल आया, लेकिन उसी वाहन से वापस लौट गया क्योंकि उस दिन स्कूल बन्द था। पहाड़ी गेट पहुँचने पर, मेटाडोर के ड्राइवर ने हरियाणा रोडवेज की खड़ी हुई बस से गुजरते समय ब्रेक लगाने का प्रयास किया, जिसमें कुछ यात्री मवार थे, लेकिन ब्रेक नहीं लगी और मेटाडोर ने बस पर मवार होते हुए एक यात्री को जिसकी गोद में बच्चा था, टक्कर मार दी। बच्चा और आधमी दोनों सड़क पर गिर गए। इन घटनाओं से घबड़ाकर और यह सोचकर कि बच्चे की मृत्यु हो गई होगी ड्राइवर वाहन को लेकर भाग गया। तथापि हरियाणा रोडवेज की बस ने उस मेटाडोर का पीछा किया। मेटाडोर का ड्राइवर भयभीत हो गया और चलते हुए वाहन से कूद पड़ा तथा चाननपुर ग्राम की सड़क की ओर भागा। मास्टर तपिन्द्र सिंह, पुत्र श्री जगरूप सिंह, जो ड्राइवर की सीट के पीछे बैठा

हुआ था, ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए तत्काल स्टेयरिंग व्हील संभाल लिया, बली जला दी तथा गीयरमै का प्रयोग करके वाहन को रोक दिया। यह तो तपिन्द्र सिंह का ही प्रयास था कि दुर्घटना होने से बच गई नहीं तो मेटाडोर गहरे खड्ड में गिर जाती जिसमें वाहन में यात्रा कर रहे 25 छात्रों की जान जोखिम में पड़ जाती।

2. मास्टर तपिन्द्र सिंह ने 25 छात्रों की जानें बचाने में अदम्य साहस, तत्परता और सूझ-बूझ का परिचय दिया।

43. श्री वीरभान कपूर  
गीता - संजय मेमोरियल पब्लिक स्कूल,  
लोहिया नगर,  
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

गीता-संजय मेमोरियल पब्लिक स्कूल, गाजियाबाद के संस्थापक श्री वीरभान कपूर ने एक अध्ययन दौरे का आयोजन किया। 29-9-1992 को लगभग 4.00 बजे प्रातः अध्ययन पार्टी को ले जा रही वैन पंजाब हिमाचल प्रदेश सीमा चैकपोस्ट पर रुकी। चालक वैन से उतर कर अपने कामजात बिखाने के लिए चैकपोस्ट पर चला गया। इसी बीच पीछे से आ रहे एक ट्रक ने खड़ी हुई वैन में टक्कर मार दी जिससे यह वैन हलान की तरफ आगे बढ़ने लगी। बिना चालक के वैन का हलान की ओर आगे बढ़ते देख कर श्री कपूर अदम्य साहस तथा सूझ-बूझ का परिचय देते हुए चलती हुई वैन में से बाहर कूद गए और अपनी पूरी ताकत से इसे रोकने का प्रयास किया परन्तु वे इसे रोकने में सफल नहीं हुए और ऐसा करते हुए उन्हें सीटें धर्या। वास्तव में श्री कपूर धीरे-धीरे आगे बढ़ती हुई वैन आगे लेट गए और वैन को रोक लिया और इस प्रकार तीन अध्ययनकों तथा 14 बच्चों को एक गम्भीर दुर्घटना से बचा लिया।

2. श्री कपूर ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना 17 व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस एवं तत्परता का परिचय दिया।

44. मास्टर धीरज चौरस,  
पूमांग चाय उद्यान,  
पो० श्री० रंगली रंगलियाँ,  
जिला दार्जीलिंग,  
पश्चिम बंगाल।

30 जून, 1993 की मध्य राति / को पूमांग चाय उद्यान दार्जीलिंग में एक भयंकर भूस्खलन हुआ एक चौदह वर्षीय बालक मास्टर धीरज चौरस घटना के दौरान गुम हुए अपनी माता तथा परिवार के दूसरे सदस्यों की दृढ़ में रात को बाहर निकल गया। खोज के दौरान उसने अपने चेचेरे भाई की चौखी मुमी जो कीचड़ एवं मलबे में दबने ही वाला था। उसने झकले हा अपने चचेरे भाई को वहाँ से निकाला और उसकी जान बचा ली। उसके बाद उसने अपनी भाभी व चचेरे को भी सफलतापूर्वक बाहर निकाल

लिया जो बल-बल में आया डूब चुके थे तथा इस प्रकार उनकी जान बचा ली। हालांकि वह अपनी जान का पता नहीं लगा सका।

2. मास्टर धीरज चौरसने अपनी जान के लिए गम्भीर खतरे की परवाह किए बिना तीन जानों को बचाने में असाधारण साहस और तत्परता दिखाई।

45. कुमारी मुन मुन दाम,  
मुपुत्री श्री सुधीर दाम,  
ग्राम कमला धावरा,  
राधानगर सिनेमा हॉल के निकट,  
पो० ग्रो० सुन्दर चौक,  
थाना—कुलटी, जिला बर्दवान,  
पश्चिम बंगाल।

18.7.1993 को कुमारी मुन मुन दाम अपनी तीन सहेलियों नामतः कुमारी पुतुल बाउरी, बुलबुल राजवार और कुमारी राधा बाउरी 5 फुट गहरे तालाब में फिमल गयीं और डूबने लगीं। इसे देखकर कुमारी मुन मुन दाम (9 वर्ष) जो तालाब के किनारे पर कपड़े बदल रही थी, तालाब में कूद पड़ी। यद्यपि उसे तैरना नहीं आता था फिर भी उसने राधा बाउरी को डूबने से बचा लिया।

2. कुमारी मुन मुन दाम ने छोट्टी सी उम्र होने के बावजूद अपनी जान के जोखिम की परवाह न करते हुए एक बालिका की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

46. कुमारी पुतुल बाउरी,  
मुपुत्री श्री नेमारी बाउरी,  
ग्राम कमलाधावरा,  
राधा नगर सिनेमा हॉल के निकट,  
डाकघर सुन्दर चौक, थाना कुलटी,  
जिला बर्दवान, पश्चिम बंगाल।

18.7.1993 को कुमारी पुतुल बाउरी अपनी तीन सहेलियों नामतः मुन मुन दाम, कुमारी बुलबुल राजवार और कुमारी राधा बाउरी के साथ तालाब में स्नान करने गयीं। अकस्मात् कुमारी बुलबुल राजवार और राधा बाउरी 5 फुट गहरे तालाब में फिमल गयीं और डूबने लगीं। इसे देखकर कुमारी पुतुल बाउरी 11 वर्ष, जो तालाब के किनारे पर कपड़े बदल रही थी, तैरना न जानने के बावजूद तालाब में कूद पड़ी और बुलबुल राजवार को डूबने से बचा लिया।

2. कुमारी बुलबुल बाउरी ने अपनी जान के जोखिम की परवाह न करते हुए एक बालिका को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

47. जी/162356 एल०ओ०ई०एम० अशोक कुमार पाल,  
351 आर०एम०पी०एल० (ग्रेफ) केयर 55,  
आर०एस०आई० (ग्रेफ)/16 बी०आर०टी०एफ०

24-3-1994 को श्री अशोक कुमार पॉल सी०पी०एल० रमेश चंद्र जो सहस्रालय की सीट पर बैठे थे कि साथ कार्गिल

वाटलिक मड़क पर मोड़ों को चौड़ा करने के लिए पेलोडर चला रहे थे। कूकि पेलोडर के टायर कटफट गए थे और उठाई रूड़ पराप्त हो गयी थी इसलिए पे लोडर एक मोड़ पर फिसल गया और घाटी की तरफ उलट गया। इसे देखकर श्री पॉल ने पी० पी० एल० रमेश चन्द से स्प्रिंग को बचाने के लिए बाहर कूदने को कहा और साथ ही साथ वह स्वयं भी कूद पड़े। दुर्भाग्यवश सी० पी० एल० रमेश चन्द जल्दी से नहीं कूद सके और पे लोडर के साथ घाटी में लुड़क गए। श्री पॉल ने पास आते हुए वाहन को रुकने का इशारा किया और मदद के लिए चिल्लाया तथा बिना समय गंवाए घाटी में पे लोडर की तरफ दौड़ पड़े। वहाँ पहुंचकर उन्होंने देखा कि सी० पी० एल० रमेश चन्द एक बड़ी चट्टान और पे-लोडर के हाइड्रोलिक पाइप के बीच फंसे पड़े हैं। वे उसे खींच कर बाहर निकालने के प्रयास में सफल नहीं हुए। उन्होंने धीरे नहीं छोड़ा और अपनी जान की जोखिम में डालकर बड़ी कठिनाई से वाहन को ऊपर उठाया। उन्होंने हाइड्रोलिक पाइप को हटाया और अपने साथी की सफलता पूर्ण बाहर निकाल लाए।

2. इस प्रकार श्री पॉल ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए सी० पी० एल० रमेश चन्द की जान बचाने में असाधारण साहस और सतर्कता का परिचय दिया।

48. जी/118633 एल पायनियर वीरभान प्रसाद,  
1605 पी० एल० आर० कंपनी (ग्रेफ),  
मार्फत 99 ए० पी० ग्रो०

2-3-1994 को लगभग 15.30 बजे मिनिंग से लौटते समय डी० डी० एम० रोड पर एक ट्रक जिसे राजाराम झावर चला रहा था, दुर्घटनाग्रस्त हो गया और घाटी में 300 फुट नीचे जा गिरा। जब लगभग 17.00 बजे इस दुर्घटना की सूचना 105 रोड कंस्ट्रक्शन कंपनी को मिली तो प्रशासनिक सुपरवाइजर ने पायनियर वीरभान प्रसाद सहित एनिए के दो कर्मियों को इकट्ठा किया और दुर्घटना स्थल की ओर चले पड़े। मोड़ पर पहुंचने पर उन्होंने देखा कि दुर्घटना स्थल अत्यधिक ढलान वाला, खतरनाक और कीचड़दार भूभाग है। लेकिन पायनियर वीरभान प्रसाद ने अपने प्रशासनिक सुपरवाइजर के साथ साहसिक प्रयास किया और अंदरे में कीचड़ वाली ढलानों को पार करने हुए घाटी में उतर गए। बाकी कर्मियों ने उसके साहसिक प्रयास में प्रेरित होकर उनका अनुसरण किया। पायनियर वीरभान प्रसाद ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए अन्य कर्मियों की सहायता में दो वाहन कर्मियों तथा जर्बों को उठाया और उन्हें सड़क पर ले आए और इस काम को पूरा करने के लिए उन्होंने कई बार ऐसा किया।

2. इस प्रकार पायनियर वीरभान प्रसाद ने अपनी जान के लिए खतरे की परवाह न करते हुए घायल व्यक्तियों को बचाने में असाधारण उत्कृष्ट नेतृत्व, मानवता और सूझबूझ का परिचय दिया।



49. जी०-104513 एफ, पायनियर जल्मू राम,  
1605 (ग्रेफ) पी० एन० आर० कम्पनी,  
मार्फत 99 ए० पी० ओ० ।

2-3-1994 को लगभग 15.30 बजे मिगिंग से लौट रहा एक ट्रक जिसे झाड़वर राजा राम चला रहा था, डी० डी० एम० रोड, अरुणाचल प्रदेश में दुर्घटनाग्रस्त हो गया और घाटी में 300 फूट नीचे जा गिरा । जब इस दुर्घटना की सूचना लगभग 1700 बजे 105 रोड कन्स्ट्रक्शन कम्पनी को मिली तो प्रशासनिक सुपरवाइजर ने बचाव कार्य के लिए 30 श्रमिकों को एकत्र किया । पायनियर जल्मू राम स्वेच्छा से इस दल में शामिल हो गए । दुर्घटना स्थल पर पहुंचने पर उन्होंने देखा कि यह स्थान अत्यधिक ढलानवाला, कीचड़दार और बहुत ही खतरनाक है । पायनियर जल्मू राम उस बचाव दल के पहले दल में थे जिन्होंने अंधेरे में घाटी में उतरने का साहस जुटाया, और घायल कामिकों को सड़क में ले आए ।

2. इस प्रकार पायनियर जल्मू राम ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना घायल व्यक्तियों की जानें बचाने में असाधारण साहस, अधिक प्रयास एवं तत्परता का परिचय दिया ।

50. जी-164497 बाई, सुपरवाइजर एन० टी०-II,  
जोगिन्दर कुमार चौहान,  
1594 पी० एन० आर० कम्पनी,  
ग्रेफ, मार्फत 56 ए० पी० ओ० ।

2-3-1994 को लगभग 15-30 बजे मिगिंग से 105 रोड कन्स्ट्रक्शन कम्पनी की लोकेशन पर लौटते हुए एक ट्रक जिसे झाड़वर राजा राम चला रहा था और जिसमें 14 अन्य व्यक्ति सवार थे, दुर्घटनाग्रस्त हो गया तथा 300 फूट नीचे घाटी में जा गिरा । दुर्घटना के बारे में सुनकर सुपरवाइजर एन० टी०-II श्री जोगिन्दर कुमार चौहान जो 105 रोड कन्स्ट्रक्शन कम्पनी/44 बोर्डर रोड फोर्स टास्क प्रोजेक्ट वर्क में कार्यरत थे, ने स्वयं ही 30 कामिक का एक दल तैयार किया और दुर्घटनास्थल की ओर चल पड़े । जिस समय वे दुर्घटनास्थल पर पहुंचे अंधेरा हो चुका था । दुर्घटनास्थल अत्यधिक ढलान वाला तथा वर्षा के कारण कीचड़दार था । इन सभी बाधाओं के बावजूद श्री चौहान ने अपनी टीम को प्रेरित किया और बचाव कार्य करने में अपनी टीम का नेतृत्व किया । उन्होंने दुर्घटनास्थल से पहले घायलों को और उसके बाद शवों को बाहर निकाला । इस प्रकार श्री चौहान की बहादुरी से राइफलमैन गुरेश संगमा सहित कई अमूल्य प्राणों की रक्षा हुई ।

2. श्री जोगिन्दर कुमार चौहान ने अपनी जान की परवाह किए बिना अमूल्य प्राणों की रक्षा करने में पहल शक्ति, असाधारण नेतृत्व, साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

3-511 GI/94

51. जी-56588 बाई बी०/आर० 1,  
पारेकलथिल वारके थामस,  
अधीक्षक बी०/आर० ग्रेड II,  
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स,  
68 आर० सी० सी०,  
मार्फत 56 ए० पी० ओ० ।

20-1-1994 को, श्री पी० बी० थामस, जो हिमाचल प्रदेश में परियोजना दीपक की 112 कि० मी० लम्बी सड़क थामी किंगल के प्रभारी थे, एक सरकारी वाहन जिसमें एम० टी० झाड़वर कृष्ण चन्द चला रहा था, जी० आर० ई० एफ० के चार अन्य कर्मचारियों के साथ डिटचमेंट ब्रमंतपुर जा रहे थे । 13.45 बजे थामी-किंगल सड़क पर 75.250 कि० मी० पर पहुंचते पर श्री थामस ने देखा कि एकड़ी के स्तरीयों में भरा एक निबिड ट्रक जो उबरी रात चला गया था गहरी खाइ में गिर पड़ा है । श्री थामस ने तुरन्त अपनी वाहन रुकवाया, वागडोर अपने हाथ में ली तथा उनके साथ चल रहे चारों कामिकों को दुर्घटना-स्थल तक पहुंचने की सलाह दी । श्री थामस ने अपने वाहन में पड़ी समीला रस्सी की सहायता से इन लोगों को एक-एक करके घाटी के नीचे उतरने के लिए प्रेरित किया । दुर्घटना-स्थल पर पहुंचने पर उन्होंने पाया कि उस दुर्घटनाग्रस्त वाहन में सवार तीन व्यक्ति अचेतनावस्था में पड़े थे जिनमें मृत समझ लिया गया था तथा चौथा व्यक्ति स्तरीयों तथा चट्टानों के बीच दबा पड़ा था और पूरी तरह से घायल हो गया था । घायल व्यक्ति को श्री थामस के मार्ग दर्शन में बड़ी कठिनाई से बाहर निकाला जा सका । इसी बीच, हिमाचल प्रदेश राज्य परिवहन पथ की एक बस दुर्घटना स्थल पर पहुंची । श्री थामस ने इस बस की एक लम्बी सीट बाहर निकाली और उसे एक कामचलाऊ स्टैंचर का रूप दिया । घायल व्यक्ति को इस कामचलाऊ स्टैंचर की सहायता से सड़क पर लाया गया तथा उसे तुरन्त अस्पताल पहुंचाया गया ।

2. श्री पी० बी० थामस ने एक व्यक्ति की जान बचाने में असाधारण पहल शक्ति, नेतृत्व, गुणों, साहस तथा तत्परता का परिचय दिया ।

52. जी/163428 डब्ल्यू० एम०/बाबल बजीर सिंह,  
1462 अनिगियन एम० बाई० एम (पी० आर० ई० एफ०),  
मार्फत 99 ए० पी० ओ० ।

2-3-1994 को, एक सरकारी वाहन जिसमें 14 सवार थे, मिगिंग से लौटत समय अरुणाचल प्रदेश के भीतरी क्षेत्र में डी० डी० एम० रोड पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया तथा एक गहरी घाटी में गिर पड़ा इस दुर्घटना के बारे में सुनकर एम०/बाबल बजीर सिंह दुर्घटना स्थल पर राटना हुआ आया और उन व्यक्तियों को बचाने के लिए तत्पर हो गए करने के लिए बचाव दल में शामिल हो गए तथा अंधेरे में घाटी में लकरीवन 300 फूट नीचे अत्यधिक कीचड़दार स्थान में

उत्तर गया तथा असम राहफल्म के बावल आर/मैन सुरेश संगमा को बचा लिया।

2. एम/बाला बजीर मित्र ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना एक व्यक्ति की जान बचाने में विशिष्ट पहल यत्नि, अगाधारण, तेजस्व गणों, माहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

53. मास्टर विश्वम केमरी सामंवा,  
मुकाम व डाकघर गोवर्धनपुर, बाया राहमा,  
जिला—अमनगिरपुर,  
उड़ीसा—754140

18-6-1993 को प्रातः 10.00 बजे गांव गोवर्धन-पुर की दो बालिकाएं कुमारी कनकलता (9 वर्ष) तथा कुमारी हलुरानी दाम (7 वर्ष) पाईका नदी में स्नान कर रही थी। दुर्घटनावश कुमारी हलुरानी दाम नदी के तेज बहाव में बह गई। वह किसी तरह अपनी मित्र कुमारी कनकलता को भी अपने साथ खींचती चली गई। जब वह डूब रही थी तो उन्होंने महा-यत्ना के लिए शोर-गुल मचाया। दुर्घटनास्थल पर पानी की गहराई तकरीबन 25 फुट तथा नदी की चौड़ाई 120 मीटर थी। यह देखकर एक 15 वर्षीय बालक मास्टर विश्वम केमरी सामंवा नदी में कूद पड़ा, उस स्थान तक तैरता हुआ चला गया तथा दून बालिकाओं को बचा लाया।

2. मास्टर विश्वम केमरी सामंवा ने अपनी जीवन की परवाह किए बिना दो बालिकाओं की जान बचाने में अदम्य माहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

54. मास्टर जतिन्दर जीत सिंह संधा,  
गांव एवं डाकघर संजु संधा,  
राहसील और जिला—जालन्धर,  
पंजाब।

30-8-1993 को जनता हाई स्कूल, झण्डू संधा (जिला जालन्धर) के अध्यापक तथा छात्र अपनी कक्षाओं को छोड़ बाहर आ गए क्योंकि स्कूल के परिसर में लगे मधुमक्खियों के छत को किसी ने छोड़ दिया था, जिससे मधु-मक्खियां सभी विद्याओं में उड़ रही थी। दो भाई मास्टर हृषी तथा मास्टर मंजीत गांध किसी तरह बहों से भाग नहीं पाए और मधुमक्खियों ने उन पर हमला कर उन्हें डंक मार दिए। यह देखकर, वसवी कक्षा के छात्र मास्टर जतिन्द्र जीत सिंह ने हिम्मत की तथा अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना अपने में दरी लपेट ली और उन युवा लड़कों की ओर दौड़ पड़ा और एक-एक करके उन्हें सुरक्षित स्थान तक ले आया। उसके बाद दोनों घायल लड़कों को स्कूल अधिकारियों द्वारा तत्काल बुलाए गए डाक्टर द्वारा उपचार किया गया।

2. मास्टर जतिन्दर जीत सिंह संधा ने अपनी जान की जोखिम की परवाह किए बिना दो बालकों की जान बचाने

में अनुकरणीय पहल, अदम्य साहस तथा सूझ-बूझ का परिचय दिया।

55. कुमारी ममता नोगह,  
गांव सलमोड़ा,  
डाकघर मालोवापाठा,  
बाया कार्किला भुव,  
जोरहट, असम।

28-7-1993 की शाम को कुमारी ममता नोगह अपने घर का पलस्तर करने के लिए कुछ मिट्टी लेने बाहर आई। उनका द्वाई साल का भतीजा निकट ही खेल रहा था। ममता के घर से कुछ ही मीटर दूर बाजीजान ताला है, उसमें बाढ़ आई हुई थी। अचानक ममता ने एक चीख सुनी और वह दौड़ती हुई आई तथा उसने देखा कि उनका भतीजा बाजीजान ताले में गिर पड़ा है और ताले के प्रचण्ड वेग के साथ बहता जा रहा है। अपनी जान की परवाह किए बिना वह उस ताले में कूद पड़ी, पानी के वेग के विरुद्ध तैरती हुई उस स्थान तक पहुंची और अपने भतीजे को पकड़ लिया। इसके बाद अथक प्रयासों में वह ताले के किनारे तक पहुंचने में सफल हुई। इसी बीच, शोरगुल सुनकर उस बालक के पिता भी उस स्थान तक पहुंच गए तथा उन्हें बाहर खींच लिया।

2. कुमारी ममता नोगह ने अपनी जान के जोखिम की परवाह किए बिना अपने भतीजे की जान बचाने में अदम्य माहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

56. कुमारी मनीषा (मरणोपरान्त)  
130, विष्णुपुरी,  
थाना—कोरसी, जिला—अलीगढ़,  
उत्तर प्रदेश।

11-5-1992 को शाम को लगभग 6 बजे कुमारी मनीषा अपनी मां के साथ विष्णुपुरी में एक मन्दिर में घर लौट रही थी। उसने देखा कि एक छोटा बच्चा तेजी से आ रहे एक स्कूटर के बिल्कुल सामने सड़क में खड़ा है। यह देखकर कुमारी मनीषा सहजबोध से उस बच्चे को बचाने के लिए दौड़ी तथा बच्चे को स्कूटर के सामने से परे धकेल दिया, परन्तु दुर्भाग्यवश वह स्वयं तेज गति से आती हुई मार्शल कार की चपेट में आ गई।

2. कुमारी मनीषा ने एक बच्चे की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया, लेकिन ऐसा करते समय उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

57. कुमारी रनिता खारनायोर,  
माओलीयनू गांव,  
डाकघर—बेलोई,  
महाराज गियमणिप,  
मेघालय।

21-2-1993 को दोपहर में तकरीबन 2.00 बजे जब गांव के बड़े अपने-अपने खेतों में काम पर गए हुए थे,

श्रीमती ऐदा खारनायोर की झोंपड़ी में आग लग गई। गांव के छोटे बच्चे जो बाहर खुली जगह में खेल रहे थे, जलती हुई झोंपड़ी की तरफ भागे, लेकिन झोंपड़ी के अन्दर फंसे 2 वर्षीय बालक को बचाने के लिए किसी की भी हिम्मत अन्दर जाने की नहीं हुई। विचलित हुए बिना कुमारी रनिता खारनायोर दौड़ती हुई जलती हुई झोंपड़ी के अन्दर चली गई तथा उस बच्चे को सफलतापूर्वक सुरक्षित बाहर निकाल लाई। आग लगने का पता चलने पर अब तक गांव के बड़े वापिस आए, झोंपड़ी तथा घर का अन्य सामान जल कर राख हो चुका था।

2. कुमारी रनिता खारनायोर ने अपनी जान की परवाह किए बिना जलती हुई झोंपड़ी में फंसे अपने भाई की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

58. मास्टर रूपेश कुमार तिवारी उर्फ सांनू,  
धाना—राहतगढ़, जिला—सागर,  
मध्य प्रदेश—370117।

25-8-1994 को कुमारी इन्दू चौबे (9 वर्ष) सरस्वती शिणु मन्दिर रोहितगढ़ से घर लौटते समय एक नाले में गिर पड़ी जो भारी वर्षा के पानी के कारण भरा पड़ा था। मास्टर रूपेश कुमार, जो नजदीक स्थित अपने घर से इस घटना को देख रहा था, तुरन्त घटनास्थल तक दौड़ता आया और नाले में कूद पड़ा तथा अधिक प्रयत्नों से उस लड़की को नाले से बाहर निकाल लाया। बाद में कुमारी इन्दू का उपचार कराया गया। इस बहादुरी से मास्टर रूपेश की मिर में चोटें आईं।

2. मास्टर रूपेश कुमार ने अपनी जान के जोखिम की परवाह किए बिना एक लड़की की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

59. मास्टर शिवशंकर मधुकर बिदरी,  
मेन रोड ओमेरगा,  
जिला—उस्मानाबाद,  
महाराष्ट्र—413606।

30-9-1993 को महाराष्ट्र के उस्मानाबाद तथा लाटूर जिलों में आए भूकंप से मानव-जीवन तथा संपत्ति का बड़े पैमाने पर विनाश हुआ। उन दुर्भाग्यपूर्ण दिन, मास्टर शिवशंकर जो गणेश उत्सव देखने गांव कानेगांव में स्थित अपने दादा-दादी के घर गया हुआ था, 30-9-1993 की बहुत मुबह उस समय उठ बैठा, जब उसने बड़े जोर के धमाके की आवाज सुनी, जिसके पश्चात् बिजली चली गई। खतरे को भांपकर वह एक-एक करके अपने दादा-दादी को घर से बाहर खींच लाया। जैसे ही उसने यह काम पूरा किया, पूरा घर टूटकर बह गया। इस तरह, मास्टर शिवशंकर ने अपने दादा-दादी की जान बचा ली।

2. अपनी कम उम्र के बाबजूद मास्टर शिवशंकर ने अपने दादा-दादी की जान बचाने में सूझ-बूझ तथा तत्परता का परिचय दिया।

60. मास्टर विवेक खरे,  
निबिल अस्पताल के सामने,  
गंज बसोदा, जिला—बिबिशा,  
मध्य प्रदेश—464221।

21-5-1994 को मास्टर विवेक खरे सड़क पार कर रहा था। उराने मास्टर मोना नाम के एक चार वर्षीय बालक को देखा कि अचानक सड़क पर आ गया था और एक मेटाडोर वैन बहुत तेज गति से उसी दिशा में आ रही थी। मास्टर विवेक खरे एक क्षण का भी विलम्ब किए बिना बालक की ओर लपका और उसे एक हाथ से खींचकर सड़क के दूसरी ओर ले आया। कुछ ही क्षणों बाद वह मेटाडोर उसी जगह से तेज गति से गुजर गई। यदि मास्टर विवेक खरे ने तत्परता का परिचय न दिया होता अथवा कार्रवाई करने में जरा भी विलम्ब किया होता, तो मेटाडोर ने मास्टर मोना को कुचल दिया होता।

2. मास्टर विवेक खरे ने अपने जीवन की परवाह किए बिना एक बालक की जान घातक दुर्घटना से बचाने में अदम्य साहस तथा सूझ-बूझ का परिचय दिया।

गिरीश प्रजान  
निदेशक

कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन संवर्धन  
(पेंशन एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग)  
नई दिल्ली, दिनांक 17 फरवरी 1996

संकल्प

सं० 41/24/93—पी० एंड पी० डब्ल्यू० (जी)—  
राष्ट्रपति ने दिनांक 21-3-1994 के संकल्प संख्या 41/  
24/93—पी० एंड पी० (डब्ल्यू०) के अधीन गठित पेंशन  
एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग के लिये स्वैच्छिक अभिकरणों  
को स्थायी समिति (स्कोवा) के गैर-सरकारी सदस्यों के  
लिए निर्धारित सेवा की अवधि 31-3-1996 तक बढ़ा  
दी है।

डा० निदेश चन्द्र  
अवर सचिव

आवेष्ट

आवेष्ट दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत का  
राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

यह भी आवेष्ट दिया जाता है कि संकल्प की प्रति सभी  
राज्य सरकारों ने/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों, भारत सरकार के  
संवालयों/विभागों तथा अन्य सभी संस्थाओं को भेजा जाए।

डा० निदेश चन्द्र  
अवर सचिव

## PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 10th March 1995

No. 101-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of 'Uttam Jeevan Raksha Padak' to the under-mentioned persons :—

Shri Chander Singh, (Posthumous)  
S/o Shri Jeetu,  
Village & PO Atawla,  
Tehsil & Distt. Panipat,  
Panipat, Haryana.

On 19-4-1994, a fire accidentally broke out in the house of Smt. Sona Devi of village Atawala in District Panipat. The children of Smt. Sona Devi who were sleeping on the roof of the house were trapped in the fire. On seeing this, Shri Chander Singh, the neighbour of Smt. Sona Devi made valiant efforts to extinguish the fire and managed to save the lives of four children trapped in the fire. During this process, the roof of the house gave way and as a result, Shri Chander Singh sustained grievous injuries. He was rushed to Hyderabad Hospital, Panipat immediately and thereafter taken to Rohtak Medical College. However, he died on 17-5-94.

2. Shri Chander Singh displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of four children trapped in the fire and in the process made the supreme sacrifice of his own life.

2. Master M. Manjunath,  
S/o Shri Mallikarjuna Swamy,  
Old No. 368, B.D., A., No. 37-E,  
Araundathi Nagar,  
Gangondanahalli,  
Inanabharthi, P.S. Limits,  
Bangalore-560039, Karnataka.

On 4-3-1994, fire broke out at Gangondanahalli, P.S. Inanabharthi, Bangalore. Since the place is surrounded by hilly terrain, the fire, helped by the fast wind, engulfed the entire area in no time. In the incident, 120 huts were burnt and 4 children lost their lives. Master Manjunath who was playing in front of his hut noticed that three children namely Vinay (2 years), Kiran (3 years) and Prasad (10 months) were trapped inside a burning hut. He immediately rushed into that hut and rescued Vinay and Kiran, and also alerted the grand mother of the children who immediately entered the hut and rescued the ten month old Prasad who was sleeping in the hut.

2. Despite his tender age, Master M. Manjunath showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three children from being burnt to death, unmindful of the risk involved to his life.

3. Master P. C. Lalremruata, (Posthumous)  
S/o Shri P. C. Rohmingthunga,  
S. A., P.W.D., Chandmay West,  
Aizawl, Mizoram.

On 17-11-1993, Master P. C. Lalremruata and his two friends went to an old water reservoir, at Chandmay West for washing clothes. Accidentally, both the friends of Master Lalremruata fell down into the reservoir. One of the boys managed to come out of water but the other boy named Lalilanchhunga was unable to come out of the water and started drowning. On seeing this, Master Lalremruata, immediately dived into the water, reached the drowning boy and managed to push him up on to the steps of the reservoir thereby saving his life. However, in the process, he himself lost control and got drowned in the reservoir.

2. Master Lalremruata displayed promptitude and gallantry of a high order and saved the life of his drowning friend. However, in the process, he made the supreme sacrifice of his life.

4. Shri Darshan Singh, (Posthumous)  
Village Bhirpur (Bibipur),  
Teh. & Distt. Patiala,  
Punjab.

On 11-7-1993, there was an unprecedented flood in the district of Patiala, Punjab. Shri Darshan Singh could barely

evacuate his family when he found that his jhuggi was demolished by the tury of the swirling waters. While trying to salvage whatever was left of his meagre belongings, he saw people being swept away by the ever increasing torrent of flood waters in the Chhoti Nadi and adjoining areas. Inspired by his instinct to save the precious human lives, he jumped into the Chhoti Nadi and started rescuing people who were being swept away by the waters. Regardless of the threat to his personal safety, he repeatedly dived into the flood waters during the next two days, each time rescuing a person and by the afternoon of 13-7-1993, he was able to save nineteen lives.

2. On the afternoon of 13th July, 1993, he noticed that due to a strong current, an army boat evacuating people from Guru Nanak Nagar hit a pole while crossing the Chhoti Nadi. This destabilised the boat which overturned and then capsized. Shri Darshan Singh who was about 30 yards downstream, immediately plunged into the water, rescued two children and handed them over to the people standing on the bank. Exhausted but undaunted, he again dived into the swirling waters and brought out Colonel A. K. Gupta, Commanding Officer of the 114 Engineers Regiment and leader of the rescue team from being drowned. Shri Darshan Singh, though completely exhausted, could not control himself seeing a child being swept away and he once again plunged into the water. In his effort to save the life of the child, he got entangled in the weeds and hyacinth beneath the surface of the water and was sucked under the water. His body was recovered 500 yards down-stream after two days when the flood water had receded.

3. Shri Darshan Singh exhibited exemplary courage and a rare sense of concern for human life in utter disregard to his personal safety. He was responsible for saving many lives but in the process made the supreme sacrifice.

5. Shri Subhash Chander, (Posthumous)  
H. No. 5095, Mohalla Dalal Pura,  
Fazwari Chowk,  
Patiala,  
Punjab.

In the month of July, 1993, Patiala District of Punjab had witnessed untold devastation and misery in the form of unprecedented floods. On 12-7-1993, Shri Subhash Chander, Reader to Naib Tehsildar, Patran was on duty when village-Shatrana and the surrounding areas were facing the full fury of the floods. On that day, Shri Subhash Chander was handling a rescue boat right from the morning and by 8.00 P.M., he had rescued about 125 people at great risk to his own life. Shri Chander was all along combating the murderous flood water without a safety jacket and by taking fuel from those vehicles stranded in the area when his own engine ran out of petrol. Exhausted but undaunted, and unmindful of the gathering darkness, he once again set out to bring back the marooned people from the outlying 'Deras' (outlying human settlements). While coming back, despite the best efforts made by Shri Subhash Chander, the boat on which he alongwith six others whom he was rescuing were travelling, capsized and all of them got drowned in the marauding waters.

2. Shri Subhash Chander displayed exemplary courage, unparalleled valour and a high sense of duty in his relentless efforts to save the lives of others regardless of his personal safety and in the process made the supreme sacrifice.

6. Master Gurpreet Singh, (Posthumous)  
Village Kotla Bhajka,  
Distt. Fatehgarh Sahib,  
Punjab.

On 2-3-1994, at 9 A. M. Km. Mahinder Kaur (2 years) and Master Praveen Singh (21 years) were playing near a railway track. Master Gurpreet Singh who was standing nearby, noticed a train coming towards the children at a very high speed. Sensing that both the children could be crushed by the fast approaching train, Master Gurpreet Singh pulled Km. Mahinder Kaur away from the track. He then went ahead with the intension of saving the other child, but in the process both Master Gurpreet Singh and Master Praveen were crushed under the train.

2. Master Gurpreet Singh displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of Km. Mahinder Kaur but in his attempt to save the second child, he made the supreme sacrifice of his own life.

7. Master Surender Singh Negi, (Posthumous)  
H. No. 69, Pocket D-13,  
Sector-7, Rohini,  
Delhi-110085.

On 1-5-1994 at about 11.00 A.M., two boys, Shri Lokesh and Shri Surender, in the age group of 15-16 years, went to Hyderabad Canal near Rohini for taking bath. Shri Lokesh jumped from the bridge into the canal for a swim but started drowning. He then shouted for help. On hearing the frantic calls of his friend, Shri Surender jumped into the canal to save his drowning friend. However, Shri Lokesh caught Shri Surender in such a manner that Shri Surender could neither save Shri Lokesh nor himself. In the process both the boys lost their lives. The dead bodies were later recovered with the help of the Fire Brigade.

2. Shri Surender Singh Negi showed conspicuous courage and promptitude in his attempt to save the life of his friend and in the process made the supreme sacrifice and lost his own life.

G. B. PRADHAN  
Director

No. 102-Pres/95.—The President is pleased to approve the award of "Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Shri Methuku Thirupathi Reddy,  
House No. 11-22-305,  
Pathaparudra Street,  
Kashibugga, Warangal-506002,  
(Andhra Pradesh).

On 14-2-1993, eight boys (in the age group of 10 to 14 years) belonging to village Dongala Singaram, went for a swim in the nearby village pond (Reservoir). While swimming, one of the boys named Raju, who was not proficient in swimming, lost control and started drowning in the deep water of the pond. The pond is 163 meters wide and 9.30 metres deep at the site of the accident. On seeing the plight of Master Raju, the other children started shouting for help. On hearing their cries, ten people gathered at the pond but none dared to come forward to rescue Master Raju. Shri Methuku Thirupathi Reddy, who was working in the nearby field, immediately rushed to the site of accident, jumped into the pond and saved Master Raju from drowning who was by then unconscious. Shri Reddy immediately administered first aid to Master Raju, and as a result, Master Raju regained consciousness.

2. Shri Methuku Thirupathi Reddy showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a boy from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

2. Shri Sanjit Kumar Rathee,  
Student of BVSC., & AH,  
(final year) Aravali Hostel,  
Room No. 56 C, Chaudhary,  
Charan Singh Haryana,  
Agricultural University,  
Hissar (Haryana).

On 1-11-1991, students of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, Hissar, were undergoing basic mountaineering course at Tringla-Batote (J & K) when they heard a loud thud. They rushed towards the site and found that a military vehicle had skidded off the road and had fallen down the 200 feet deep hill slopes. The students, under the leadership of Shri Sanjit Kumar Rathee, approached the ill-fated vehicle with the help of ropes and succeeded in rescuing three army jawans and two civilians trapped in the ill-fated vehicle. They also provided first aid to the injured and took them to Batote Military Hospital.

2. Shri Sanjit Kumar Rathee thus exhibited exceptional initiative and leadership qualities in saving the lives of

three army jawans & two civilians trapped in the ill-fated vehicle.

3. Shri Sanjeev Sharma,  
S/o Shri Jaswant Singh, J. E.,  
H. P. State Electricity Board,  
Andhra Colony, Sandasu,  
Chirgaon, Distt. Shimla,  
Himachal Pradesh.

On 5-6-1994, Shri Balwant Singh, who was sitting on the railing of a bridge over the River 'Pabbar', suddenly fell into the river. Since the current of the river was very strong due to snow melting in the upper reaches, he was swept and carried 100 metres downstream. None of the 30-40 persons of the colony who were witness to the incident, came forward to rescue Shri Balwant Singh. On seeing this, Shri Sanjeev Sharma, a student of 10th Class, took the initiative and without caring for his own life, jumped into the river, swam to the spot and rescued Shri Balwant Singh.

2. Shri Sanjeev Sharma showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a person from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

4. Shri M. B. Emanuel,  
Second Division Asst.,  
Office of Dy. Director of  
Public Instructions,  
(Bidar (Karnataka)).

On the night of 28/29-3-1993, Shri M. B. Emanuel was sleeping in the compound in front of his house. In the same compound, there was a drinking water well having a depth of around 100 feet with water level of about 10 feet but without an adequate fencing. An old and blind lady, Smt. Rajamma (60 years) who was living in the same compound moved out at midnight to answer nature's call. However, while returning to her home, she lost her way and accidentally fell into the deep well. Shri Emanuel was awakened on hearing her screams and alerted the neighbours. They tried to rescue the lady by tying a bucket to a rope and lowering the rope into the well. The lady caught hold of the rope tied to the bucket but slipped half way and again fell into the well with her head down. Shri Emanuel, at this stage took the initiative and got down into the well without caring for the risk involved and succeeded in helping the lady to sit in the bucket. She was then pulled up to safety. Shri Emanuel was also brought out of the well with the help of the same rope, but in the process he sustained bleeding injuries.

2. Shri M. B. Emanuel showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of an old blind lady from drowning in the well unmindful of the risk involved to his own life.

5. Shri Gururaja Naik,  
Gopalapura Shantekatte,  
No. 2-122 B Shantekatte,  
Gopalapura,  
Puttur Village,  
Udupi Taluk-576125,  
Karnataka.

On 30-9-1992, two children, namely Hemalatha (10 years) and Vishwanathan (8 years), residents of Puttur Village of Udupi Taluk accidentally fell into a 20 feet deep well. Both the children were about to drown when Shri Gururaja Naik belonging to the same village noticed the plight of the children and unmindful of the risk to his own life, immediately jumped into the well and saved the lives of the two children with the help of a coir rope.

2. Shri Gururaja Naik showed conspicuous courage, promptitude and concern for human life and saved the lives of two children from true death.

6. Shri Hanumantha Manju Gowda,  
Kasaragod Hobli,  
Honnavar Taluk,  
Uttara Kannada District,  
Karnataka.

On 31-8-1993, 17 workers employed by the Larsen and Toubro Company for construction of the Konkan Railway line, were engaged in digging a well 16 metres below the ground level, to reinforce the ground shaft for the tunnel. The shaft used for the purpose of digging suddenly collapsed and the tunnel caved in by three and a half metres burying 9 workers. Three workers, who escaped the death trap immediately succeeded in extricating their fellow worker Shri Damodar Manjaiah Naik who was half buried. Later, the three workers along with Shri Damodar Manjaiah Naik were successful in saving the lives of four of their colleagues.

2. Shri Hanumantha Manju Gowda alongwith 2 others showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of four persons unmindful of the grave risk involved to his own life.

7. Shri D. Krishna Murthy,  
No. 6/908, Vijaya Vittal Nagar,  
Siruguppa,  
Bellary District,  
Karnataka.

On 19-11-1992, a heavy flood struck village Bagewadi falling under the jurisdiction of Siruguppa P. S. and Brundavan Gadde Camp causing critical conditions for the residents of Bagewadi village and Brundavan Gadde Camp. At this critical juncture, Shri D. Krishna Murthy rushed to the spot and with the help of a country boat rescued the lives of 104 persons from the submerged area. This gallant act has also been lauded by the then Chief Minister, Shri M. Veerappa Moily, who subsequently visited Siruguppa. Shri Murthy lost his own house and agricultural land measuring about 15 acres during the flood.

2. Shri D. Krishna Murthy showed conspicuous courage and promptitude and saved the lives of 104 people unmindful of the grave risk involved to his own life.

8. Shri Shankar Durgaiiah Naik,  
Kasaragod Hobli,  
Honnavar Taluk,  
Uttara Kannada District,  
Karnataka.

On 31-8-1993, 17 workers employed by the Larsen and Toubro Company for construction of the Konkan Railway line were engaged in digging a well 16 metres below the ground level, to reinforce the ground shaft for the tunnel. The shaft used for the purpose of digging suddenly collapsed and the tunnel caved in by three and a half metres burying 9 workers. Three workers, who escaped the death trap immediately succeeded in extricating their fellow worker Shri Damodar Manjaiah Naik who was half buried. Later, the three workers along with Shri Damodar Manjaiah Naik were successful in saving the lives of four of their colleagues.

2. Shri Shankar Durgaiiah Naik, alongwith 2 others showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of four persons unmindful of the grave risk involved to his own life.

9. Shri Shivappa Neelappa Madivalar,  
Post : Chikkakuruvathi,  
Taluk : Ranegennur,  
Distt. Dharwad, Karnataka.

On 16-8-1993, some villagers of Chikkakuruvathi (Dharwad Distt.) were crossing the flooded Thungabhadra river in a navigating vessel to go over to village Hirekuravathi to visit Basaveswara Temple situated across the river. As the navigating vessel was over loaded, it started to oscillate and the passengers became panicky. In the process, three women passengers fell into the river and started drowning. Shri Shankaragowda rescued the helpless women from drowning and the vessel went on towards the other end of the river. Shri S. N. Madivalar who was grazing his sheep on the bank

of the river in close proximity saw the other five passengers struggling for life in the oscillating vessel. He immediately jumped into the river, swam to the site, caught hold of the ill-fated boat and brought it to the bank of river using all his physical strength thus saving the lives of all the five passengers.

2. Shri Shivappa Neelappa Madivalar showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 5 persons unmindful of the risk involved to his own life.

10. Shri Thimmappa Manju Gowda,  
Kasaragod Hobli,  
Honnavar Taluk,  
Uttara Kannada District,  
Karnataka.

On 31-8-1993, 17 workers employed by the Larsen and Toubro Company for construction of the Konkan Railway line, were engaged in digging a well 16 metres below the ground level, to reinforce the ground shaft for the tunnel. The shaft used for the purpose of digging suddenly collapsed and the tunnel caved in by three and a half metres burying 9 workers. Three workers, who escaped the death trap immediately succeeded in extricating their fellow worker Shri Damodar Manjaiah Naik who was half buried. Later, the three workers along with Shri Damodar Manjaiah Naik were successful in saving the lives of four of their colleagues.

2. Shri Thimmappa Manju Gowda alongwith 2 others showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of four persons unmindful of the grave risk involved to his own life.

11. Shri K. C. Gopalan,  
Kochuthevana Veedu,  
Venmony Eram, Venmony P. O.,  
Chengannur, Alapuzha Distt.,  
Kerala.

On 16-4-1993, a 11½ year old boy, named Aji S. G. was taking bath alongwith his mother at Achankovil riverbed at Kochuthevana Kadavu at village Venmony. Accidentally, the boy was carried away by the fast current and whirlpool. The riverbed had a depth of 25 feet and was about 100 feet wide at that spot. The mother of the boy raised an alarm. On seeing this, Shri K. C. Gopalan, a country boat driver and hailing from the same village, immediately rushed to the spot with his boat, jumped into the river and rescued the boy. The boy by then was unconscious and was immediately rushed to the nearby hospital where he later recovered.

2. Shri K. C. Gopalan showed exemplary courage and promptitude in saving the life of a boy unmindful of the risk involved to his own life.

12. Shri K. Vinod,  
Padeettadathu Kizhakkethil,  
Pathiyoor East,  
P. O. Keerikkadu,  
Karthikappally Taluk,  
Distt. Alapuzha,  
Kerala.

On 4-12-1993, Shri A. Mohanakumar (39 years), accidentally fell into a well while setting right the pulley and coil used for drawing water. The well is about 30 feet deep with water level of 12 feet. The people gathered at the spot made efforts to save the hapless person but without success. At this juncture, Shri Vinod rose to the occasion and immediately got a rope from the people and went down into the well with the help of the rope. On touching the water, he tied Shri Monanakumar with the rope and asked the people above to pull him up thereby saving the life of a drowning man.

2. Shri K. Vinod showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a person from drowning in the well unmindful of the grave risk involved to his own life.

13. Shri S. Anikuttan,  
Thankamoni Nivas (Kavum Mugham),  
Kalladi Mugham, Manacaud,  
P. O. Thiruvananthapuram,  
Kerala.

On 10-10-1992, due to heavy rain, the cache of the rivers Karamana and Kalli including Trivandrum city was flooded. As a result, the hut of Shri Pankajakshan, Ambalathazhappad and was washed away. Shri Pankajakshan and his 13 year-old daughter Kumari Sheeja were caught in the flood while crossing the river and started drowning. Many people on the bank of the river saw the incident but nobody came forward to their rescue. On seeing this, Shri Anikuttan who was standing on the bank of the river, jumped into the river, swam to the spot and brought both the victims to the shore one by one. The rescuing act fully exhausted Shri Anikuttan who fainted in the process but recovered later on.

2. Shri Anikuttan showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of two persons unmindful of the grave risk involved to his own life.

14. Shri R. Gangadharan Nair,  
Mannadikavil House,  
Makom North,  
Thattarampalam P.O.,  
Mavelikara, Kollam District,  
Kerala.

On 29-6-1992, two brothers namely Renjith (12 years) and Arun Kumar (7 years) went to a pond near their house for taking a bath. The pond has an area of 280 sq. metres and a depth of 10 feet. Accidentally, the younger boy slipped into the deep pond. His elder brother jumped into the pond to save him. Having no swimming experience, both the boys began to drown. At this point of time, Shri Gangadharan Nair, the temple watchman, who happened to be there, saw the boys struggling, jumped into the pond and saved the lives of both of them without caring for the risk involved to his own life.

2. Shri Gangadharan Nair showed conspicuous courage and bravely and saved the lives of two boys from drowning.

15. Shri C. H. Khalid,  
S/O Shri C. H. Abdulla,  
Bangod House,  
P. O. Talangara,  
District Kasaragod,  
Kerala.

On 28-6-1994, an old woman named Smt. Chandravathi Amma, was crossing the Chandragiri river in a country boat. The boat capsized due to flood at a place called Thuruthi and Smt. Amma fell into the river. The current of the flooded river swept her away to about 2 K.M. downstream. She shouted for help but nobody from the locality who heard the cries came forward to her rescue. On seeing this, Shri Khalid (18 years old), S/O Shri Abdulla rushed to the place, jumped into the river and swam for about 1 K. M. in the swollen river and caught hold of the woman but the current of the water swept them 1 K.M. downstream. However, Shri Khalid succeeded in bringing the woman to safety holding the coil rope thrown by people of the locality in one hand and swimming by holding the woman by the other hand.

2. Shri Khalid showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of the drowning woman unmindful of the risk involved to his own life.

16. Shri N. K. Mohanan,  
Panickassery House,  
House No. 23/1149,  
Edskochi, Kochi-6,  
Kerala.

On 27-11-1993 a Naval Boat boarded by 68 passengers while negotiating a turn off the Dufferin Point in the Cochin Harbour, capsized. Due to high tide, the depth of water at the spot of accident was about 6 metres. On seeing this Shri N. K. Mohanan, a skin driver rushed to the spot and jumped into the water to rescue the passengers trapped in and hanging out side the ill-fated Naval Boat. In the rescue operation, he

jumped into the turbulent water a number of times bringing out, one after another, the drowning and trapped passengers to safety. While diving, he saw 6 persons trapped inside the cabin of the boat and immediately smashed the glass panels of the cabin and took them out one by one. In his gallant rescue feat, he successfully saved 19 persons including men, women and a child.

2. Shri N. K. Mohanan showed conspicuous courage and promptitude in saving 19 lives unmindful on the risk involved to his own life.

17. Shri V. Prakash,  
Panchavila Veedu, Anakkallu,  
Pushpakandam P. O.,  
Parathodu Village,  
Udumbanchola Taluk,  
Idukki District,  
Kerala.

On 14-11-1992, due to heavy rains and land slip, Kambayar in Parathodu village of Udumbanchola Taluk, Idukki district was flooded resulting in the death of five persons, including Smt. Alice, W/o Shri Joseph. The stream which was flooded originated from the nearby hill-top making the current fierce during heavy rainfalls compounded by landslips. Smt. Alice, alongwith her children Joby (13 years) and Joshy (11 years) were washed away in the torrent of heavy flood. On seeing this, Shri V. Prakash jumped into the fast-flowing river without caring for the risk involved and saved the lives of the two children though he failed to save Smt. Alice. In this gallant act, Shri Prakash himself sustained serious injuries and was admitted in Karuna Hospital at Nodumkandam and remained under treatment for more than 15 days.

2. Shri V. Prakash showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of two children, unmindful of the grave risk involved to his own life.

18. Shri P. Saji,  
S/o Shri Pappachan,  
Thazhethottathil Puthen Veedu,  
Pidavoor PO,  
Pidavoor village,  
Pathanapuram Taluk,  
Kollam Distt.,  
Kerala.

On 19-3-1994, Shri Venugopal (33 years) and his wife Smt. Geetha (29 years) were taking bath in the bathing ghat at Muttathukadavu in 'Kallada' river, Village Pidavoor. While taking bath, Smt. Geetha was caught in a whirlpool known as 'Pulikayam' which is situated beneath the bathing ghat. On seeing this, Shri Venugopal attempted to save her but he himself was caught in the whirlpool and started drowning. On hearing the cries of people on the bathing ghat, Shri P. Saji rushed to the place of the incident, jumped into deep water of about 50 feet and saved the couple from drowning.

2. Shri Saji displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of the couple from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

19. Master P. V. Sujesh Kumar,  
S/o Shri Cherukunnon Sukumaran,  
P. O. Vengara, Madai Village,  
Kannur Distt.,  
Kerala.

On 13-10-1993, Master P.P. Ranju (9 years), student of Vengara Hindu L. P. School, accidentally fell into a well near the school while drawing water. The well which is about 20 feet deep was having water level of about 15 feet. Master Ranju did not know swimming. Realising the plight of the helpless child, Master P. V. Sujesh Kumar (9 years), a student of the same school, jumped into the well and saved Master Ranju from drowning.

2. Master P. V. Sujesh Kumar displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of Master Ranju from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

20. Shri P. P. Suresh Babu,  
S/o Shri Paramu,  
Areeparambu,  
Mulavukad, Ernakulam Distt.,  
Kerala.

On 4-10-1992, Shri Venugopal, a Medical Representative and his family were on a trip to the Cochin Back waters. While the boat was nearing the Menaka Jetty, Vizhnu, an eight month old child of Shri Venugopal accidentally slipped into the water. The depth of water at this point was 2.5 metres. To save his child, Shri Venugopal jumped into the water but both the child and father started drowning. On seeing this, Shri Suresh Babu, jumped into the water without caring for his own safety and rescued both of them from drowning.

2. Shri Suresh Babu showed conspicuous courage and promptitude in saving the two lives unmindful of the risk involved to his own life.

21. Shri Thomas Varghese,  
Manimala Parampil,  
Thannithodu PO,  
Thannithode Moozhy,  
Pathanamthitta Distt.,  
Kerala.

On 10-10-1992, during the monsoon, the Thannimoodu area got flooded due to heavy rain. The water level suddenly rose and by 3.00 a.m., the house of Smt. Lilly Babu which was near the bank of the river gradually got submerged in the rising flooded river. As a result, the family of Smt. Lilly Babu of seven members including two children was trapped inside their house unable to escape. The family members raised loud cries for help. Hearing the call for help, Shri Thomas Varghese, a neighbour, swam towards the house and entered into it after breaking the back door and rescued all the seven members of the family one by one.

2. Shri Thomas Varghese showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 7 persons unmindful of the grave risk involved to his own life.

22. Shri Shiv Prasad Keot,  
Village & PO—Anjora,  
Tehsil & District Durg,  
Madhya Pradesh.

On 19-10-1992, Shri Shiv Prasad Keot, who was travelling on his bi-cycle to Durg from his village Anjora to sell fish, saw that a Maruti van had lost control and had fallen into Shivrath river. Shri Keot immediately jumped into the deep river and opened the rear door of the van. Shri Keot, with the help of some other people, brought out all the six persons trapped in the van. However, lives of only three persons including two ladies could be saved.

2. Shri Shiv Prasad Keot showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of three persons without caring for the grave danger to his own life.

23. Shri Vishnu Prasad Keot, (Posthumous)  
Village & PO Anjora,  
Tehsil and District Durg,  
Madhya Pradesh.

On 12-7-1994, the heavy floods in Shivrath river, District Durg, trapped 34 persons living on the river bank. Shri Vishnu Prasad Keot alongwith two of his associates engaged themselves in the rescue work. Shri Keot tied a cot to four motor tubes with truck ropes. The other ends of the ropes were tied to trees for support. He also used telephone wires, and putting his own life as well as the lives of his associates in great danger, was able to save the lives of about 8 to 12 persons. In his attempt to save the lives of others and due to a puncture in the motor tube, the hand of Shri Keot slipped from the rope and from the telephone wire, as a result of which he was carried away by the strong current. His body was later recovered from the river.

2. Shri Vishnu Prasad Keot exhibited exemplary courage and a rare sense of concern for human life in utter disregard to his personal safety. He was responsible for saving many lives and in the process made the supreme sacrifice of his own life.

24. Smt. Damayanti Bapu Malusare,  
At. & Post—Umale, Tal. Vasai,  
Dist.—Thane,  
(Maharashtra).

On 15-11-1991, Master Chirag Rajendra Vartak, aged 5 years, accompanied a woman who had gone to Umale lake at village Umale, Taluka—Vasai, District—Thane for washing clothes. While the woman was engaged in washing clothes, Master Vartak suddenly fell into the lake and was carried away to a distance of 25 to 30 ft. from the bank of the lake & started drowning. The other ladies present at the lake started shouting for help. Smt. Damayanti Bapu Malusare, residing near the lake, heard the cries of the women and immediately rushed towards the lake. On seeing the boy drowning in the lake water, she immediately jumped into the lake and swam towards the drowning boy. She caught hold of the boy by the hand and brought him to the bank of the lake. In this rescue attempt, she sustained some minor injuries.

2. Smt. Damayanti Bapu Malusare showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of the drowning boy unmindful of the risk involved to her own life.

25. Kumar Dnyaneshwar Dagadu Dule,  
At & Post—Kadakhe, Vetale,  
Taluka-Khed, District-Pune,  
(Maharashtra).

On 28-8-1992, a group of boys and girls from village Vetale of Taluka-Khed, District-Pune were returning from their School situated on the other side of river 'Bhima'. The students normally used a canoe to cross the river. On that day, they did not find the canoe at the bank of the river. Six boys however, decided to cross the river at a shallow point of the river. They entered into the river, making a chain by holding each other's hand and reached the other side of the river. Seeing the boys crossing the river, five girls also decided to follow suit and in doing so, they unknowingly moved into the deep waters. One of the girls then lost her balance and her books fell into the water. As she bent down to collect the books, the chain of hands broke and all the five girls fell into the chest deep water and began to drown.

2. Kumar Dnyaneshwar Dagadu Dule and Kumar Santosh Ananda Shinde, who were on the other side of the river, immediately jumped into the water and swam towards the girls and managed to hold Kumari Aruna Naikade and Kumari Usha Jadhav and pulled them nearly 30 feet in the water and brought them to the bank of the river. They again jumped into the water and swam towards the remaining girls and held Kumari Rajashri and Kumari Nanda and in the same manner brought them to the bank of the river. Kumari Vandana Shantaram Naikade was, however, swept away. Efforts made by the two boys to locate her were in vain and her dead body was found at a distance of 15 kms. at Mohor Nullah after two days.

3. Kumar Dnyaneshwar Dagadu Dule alongwith Kumar Santosh Anand Shinde showed conspicuous courage, presence of mind and promptitude in saving the lives of four girls from drowning, unmindful of the risk involved to his own life.

26. Kumar Santosh Ananda Shinde,  
At & Post—Kadakhe, Vetale,  
Taluka-Khed, District-Pune,  
(Maharashtra State)

On 28-8-1992 a group of boys and girls from village Vetale of Taluka-Khed, District-Pune were returning from their School situated on the other side of river 'Bhima'. The students normally used a canoe to cross the river. On that day, they did not find the canoe at the bank of the river. Six boys, however, decided to cross the river at a shallow point of the river. They entered into the river, making a chain by holding each other's hand and reached the other side of the river. Seeing the boys crossing the river, five girls also decided to follow suit and in doing so, they unknowingly moved into the deep waters. One of the girls then lost her balance and her books fell in the water. As she bent down to collect the books, the chain of hands broke and all the five girls fell into the chest deep water and began to drown.



2. Kumar Santosh Ananda Shinde and Kumar Dnyaneshwar Dagadu Dule who were on the other side of the river, immediately jumped into the water and swam towards the girls and managed to hold Kumari Aruna Naikade and Kumari Usha Jadhav and pulled them nearly 30 feet in the water and brought them to the bank of the river. They again jumped into the water and swam towards the remaining girls and held Kumari Rajashri and Kumari Nanda and in the same manner brought them also to the bank of the river. Kumari Vandana Shantaram Naikade was, however, swept away. Efforts made by the two boys to locate her were in vain and her dead body was found at a distance of 15 kms. at Mohor Nullah after two days.

3. Kumar Santosh Ananda Shinde alongwith Kumar Dnyaneshwar Dagadu Dule showed conspicuous courage, presence of mind and promptitude in saving the lives of four girls from drowning, unmindful of the risk involved to his own life.

27. Shri Vasant Dnyaneshwar Mane,  
At & Post Velapur,  
Taluka-Malsiras,  
Distt. Sholapur,  
Maharashtra.

On 7-11-1992, the day of 'Dipawali Tulsi Vivah', at about 11.00 p.m., the hut belonging to Shri Dattatray Mahadeo Chandanshiv at Velapur caught fire accidentally. Three small children of Shri Chandanshiv aged 3, 7 and 9 years, who were sleeping in the hut were trapped in the fire. Shri Chandanshiv and his wife were not present when the hut caught fire. On seeing this, their neighbour, Shri Vasant Dnyaneshwar Mane, rushed into the hut which had by that time caught fire from all sides. He successfully rescued the children from the burning hut. In the process, Shri Mane sustained burn injuries on his right hand.

2. Shri Vasant Dnyaneshwar Mane displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three children from being burnt alive unmindful of the grave risk involved to his own life.

28. Shri Rothianga,  
S/o Shri Laltawnga Damaska Veng,  
Ngopa, Aizawl Distt.,  
Mizoram.

On 16-6-1993, when it was raining heavily, four persons were crossing Zawnghri rivulet. When three of the group had barely crossed the river, a flash flood with very strong current overtook the fourth one Smt. Lalpiani and she was swept away. At this moment, Shri Rothianga, S/o Shri Laltawnga who was on the other side of the river bank jumped into the swirling waters and managed to catch hold of her and swam ashore to safety, thus saving Smt. Lalpiani from certain death. Smt. Lalpiani who lost consciousness in the process regained consciousness after reaching the bank.

2. Shri Rothianga showed initiative and conspicuous courage in saving the life of a woman from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

29. Master C. Zonghaka,  
S/o Shri Hraniglapa,  
Muallianpui,  
Lunglei District, Mizoram.

On 23-6-1994, Shri Lalduhhlira (32 years) and one minor boy, Master C. Zonghaka, aged 14 years, both of Muallianpui village were returning home from their Jhum. The path which they were taking was on a hilly terrain.

2. On the way, Shri Lalduhhlira accidentally slipped and fell and rolled down to the river Tuiui below. Seeing the plight of Lalduhhlira who was being swept away gradually by the current of the river and was unable to help himself, Master C. Zonghaka, without losing any time pushed down to the river jumped into it, and with all his strength brought Shri Lalduhhlira to the bank and

laid him on the ground. Master Zonghaka, without losing any time ran to his village,—a distance of 5 KM from the place of occurrence and brought with him the villagers who carried Shri Lalduhhlira home and later admitted him into the hospital for treatment.

3. Master C. Zonghaka showed exemplary courage and promptitude in saving the life of a man from drowning unmindful of the risk involved to his life.

30. Master Ananda Kumar Pradhan,  
S/o Shri. Gangadhar Pradhan,  
Village Trutiapada,  
P.S. Bolagarh,  
District. Khurda, Orissa.

On 24-10-1993, while returning to his home after attending a drama rehearsal, Master Ananda Kumar Pradhan saw a young man named Dandapani Sahu drowning in the pond near a temple called Siva Temple. Shri Dandapani was in a miserable state and unable to shout for help. On seeing this, Master Ananda Pradhan despite his tender age (6½ years), jumped into the water, went near the drowning person and dragged him to the bank of the pond.

2. Master Ananda Kumar Pradhan showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a young man from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

31. Master Sabir Ali,  
S/o Shri Akbar Ali,  
Vill. & P.O. Sabar,  
Teh. Kekriji Distt. Ajmer,  
Rajasthan.

On 11-9-1992, Master Subhashit Amarpal (12 years) went to a village pond with his grandmother to take bath. The pond which was about 1000 feet in length and 600 feet in breadth, was having 10-12 feet deep water. When the grandmother was busy washing the clothes, Master Subhashit while playing accidentally fell into the deep water and started drowning. Not finding Master Subhashit around, the grandmother raised an alarm. On hearing her cries, Master Sabir Ali rushed to the site and on an indication from the lady, jumped into the deep waters. After a number of dives in the deep waters, he spotted Master Subhashit, who was by then in an unconscious condition. Master Sabir Ali caught hold of the boy and brought him to safety. After first aid, Subhashit was taken to the hospital.

2. Master Sabir Ali, Despite his tender age, showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a child from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

32. Shri Shyam Singh Solanki,  
Vill. & P.O. Sarsop, Tehsil &  
Distt Sawai Madhopur,  
Rajasthan.

On 12-7-1993, river Banaas was in spate due to the opening of water gate of the overflooded B'salpur Bund. Shri Ram Avtar, a student who was on his way back to his village was caught by the swirling waters while crossing the bridge of Sawai Madhopur—Jaipur Railway lines and was swept away. People standing on the bridge were stunned by the incident but nobody dared to come forward to help. It was in these circumstances that Shri Shyam Singh Solanki took courage and jumped into the river, searched for the boy and then rescued him by bringing him to safety.

2. Shri Shyam Singh Solanki showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of Shri Ram Avtar from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

33. Kumari Swati Khandelwal,  
D/o Shri. Shankarlal Khandelwal,  
Plot No. 47,  
Durga Vihar, Durgapuri,  
Jaipur, Rajasthan.

On 13-4-1993, Kumari Swati Khandelwal, aged 10 years, was playing near a 'hauz'. The length and breadth of the hauz was 10' x 6' and depth 10 ft. which was full to the brim. Two other children who were also playing in the vicinity of the hauz accidentally fell into it and raised cries for help. Kumari Swati, who was present on the scene of this accident took the initiative and by stretching both her hands and feet to full length succeeded in rescuing the two children by pulling them out of the hauz.

2. Kumari Swati Khandelwal despite her tender age, displayed courage and promptitude in saving the lives of two children from drowning.

34. Shri Amir Ahmed, (Posthumous)  
Moballa Rand,  
Village & P.S. Tanda,  
Tehsil Sawaar, Distt. Rampur,  
Uttar Pradesh.

During the 1st and 2nd weeks of September 1993, 495 villages of District Rampur were affected by a flash flood due to a breach in Dhariyal Bund in Tehsil Sawaar. Many government agencies including general public were engaged in rescue work for the marooned people. On 14-9-93 at about 3.30 p.m. Shri Amir Ahmed, S/o Shri Abdul Rashid who was engaged in rescue operations and distribution of relief material by using air-filled tubes, was accidentally swept away by the strong current of Kosi river and was drowned.

2. Shri Amir Ahmed showed exemplary courage and devotion to duty for a humane cause and in the process made the supreme sacrifice of his life.

35. Master Amit Handa,  
S/o Shri Jagbir Handa,  
Matkhoda Road,  
Bilaspur Town, Jampad Rampur,  
Uttar Pradesh.

Master Amit Handa, a student of 10th Class of the Dayawati Modi Academy, Modipur used to commute daily from Bilaspur by a Matador van along with other students of the school. On 9-8-1993, he along with other students came to the school as usual but returned by the same vehicle as the school was closed for the day. On reaching the Pahari Gate, the driver of the Matador tried to apply the brake while passing by a stationary Haryana Roadways bus on which some passengers were boarding but it failed and the Matador hit a passenger boarding the bus with a child in his lap. Both the child and the man fell on the road. Horrified by the sequence of these events and thinking that the child might have died, the driver sped away with the vehicle. The Haryana Roadways Bus, however, followed the Matador. The driver of the Matador became panicky and jumped out of the running vehicle and ran into the street of village Chananpur. Master Tapinder Singh, who was sitting behind the driver's seat, took control of steering wheel, put on the light and brought the vehicle to a halt by using the gears. Master Amit Handa also travelling in the van along with Master Tapinder Singh, all along signalled the vehicles coming from opposite side to drive on the other side of the road so that there may not be head on collision. But for the initiative of Master Amit Handa, the Matador would have met with an accident, endangering the lives of 25 students travelling in it.

2. Master Amit Handa displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 25 students.

36. Shri Bhupender Singh Bisht,  
S/o Shri Lal Singh Bisht,  
Prem Kutir, Joy Villa Compound,  
Tahsil,  
Nainital, Uttar Pradesh.

On 19-8-1992, a 15-year old girl, Kumari Poonam Yadav, fell in the Naini Lake and was drowning. Shri Bhupender

Singh Bisht saw the drowning girl and without wasting any time and ignoring the risk involved to his own life, jumped into the lake, swam to the spot and save Kumari Yadav from certain death.

2. Shri Bhupender Singh Bisht displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of Kumari Yadav from drowning unmindful of the risk to his own life.

37. Shri Chandan Singh Khani,  
S/o Shri Kharak Singh Khani,  
Village Tarula, P.O. Nayoliharra,  
Teh. & Distt. Almora,  
Uttar Pradesh.

On 25-8-1992, an electric line snapped and the live wire fell into the premises of Sarwati, Shishu Mandir, situated in the compound of Ram Mandir. Three children who were playing in the compound along with other children got struck to the live wire. On seeing this, Shri Chandan Singh Khani who was standing on the roof of his house, immediately climbed on to the electric pole and cut the live wire that saved the three children from electrocution besides saving the other children who were in danger of coming into contact with the live wire while playing in the compound.

2. Shri Khani showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three children from electrocution unmindful of the risk involved to his own life.

38. Shri Jagdish Prasad Chamoli,  
S/o Late Shri Devi Dutt Chamoli,  
Village Syalkhot Patti Bachhnasyu,  
Teh. Pauri, Jampad Garhwal,  
(Uttar Pradesh).

On 23-5-1994 at 01-30 a.m., a tiger entered the house of Shri Jagdish Prasad Chamoli in Garhwal District. Shri Chamoli, with courage and presence of mind, pounced on the tiger to have direct encounter with him and succeeded in killing the beast with domestic weapons and stick and thus saved the lives of his wife and five children from the man-eater.

2. Shri Chamoli showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of members of his family from the clutches of a tiger.

39. Shri Mirza Hussain Abbas,  
S/o Shri Mirza Ishrat Hussain,  
Sheshpur,  
Gita Press,  
P. S. Rajghat,  
Gorakhpur,  
Uttar Pradesh.

On 1-7-1993, twelve children who were participating in the Muharram procession, boarded a boat tied to the bank of the river Rapit. Accidentally, the knot of the rope got untied and the boat started moving. Since the river was in flood, the boat moved to midstream due to the strong currents and the wind. The children on board got panicky and started raising alarm. On seeing this, Shri Mirza Hussain Abbas, without caring for his own safety, jumped into the river, swam to the site and brought back the boat to the bank and thus saved the lives of hapless children.

2. Shri Mirza Hussain Abbas showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 12 children from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

40. Shri Siraj Khan,  
S/o Shri Mashook Ali Khan,  
Village Nisvi,  
Tahsil & P. S. Milak,  
Distt. Rampur,  
Uttar Pradesh.

On 31-3-1992 night, a fire broke out in the house of one Laddan Khan S/o Shri Barkatullah Khan, village Nisvi, Distt. Rampur. Shri Laddan Khan and his family consisting of his wife, his daughter-in-law and her two children were trapped in the house. They shouted for help. On hearing the frantic calls, their neighbour, Shri Siraj Khan

rushed and entered into the burning house and brought the family out to safety. In the process, Shri Siraj Khan himself sustained severe burn injuries for which he had to remain in hospital for a week's treatment.

2. Shri Siraj Khan showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 5 persons from a burning house unmindful of the grave risk involved to his own life.

41. Shri Sushil Kumar Pateria, (Posthumous):  
S/o Shri Rajinder Kumar Sharma,  
12-Rai Ka Tazia,  
P. S. Kotwali,  
Jhansi,  
Uttar Pradesh.

On 10-4-1992, Shri Sushil Kumar Pateria was engaged in decorating idols installed at Ganes'iji Temple, situated near the pond of the Dharmshala in Jhansi City. A mentally retarded woman suddenly jumped into the deep and muddy water of the pond and started drowning. The people gathered at the temple to pay obeisance raised loud cries. On hearing the frantic calls for help, Shri Sushil Kumar Pateria rushed to the site and jumped into the pond ignoring the risk involved to his own life. After sustained efforts, he succeeded in bringing the drowning woman to a shallow spot and saved her life. However, Shri Pateria got stuck in the deep and muddy water from where he was pulled out in unconscious state. He was rushed to the Hospital for treatment where he was declared dead.

2. Shri Sushil Kumar Pateria displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a lady but in the process made the supreme sacrifice.

42. Master Tapinder Singh,  
S/o Shri Jagrup Singh,  
Matkhoda Road,  
Bilaspur Town,  
Janpad Rampur,  
Uttar Pradesh.

Master Tapinder Singh, a student of 10th Class of the Dayawati Modi Academy, Modipur used to commute daily from Bilaspur by a Matador van along with other students of the school. On 9-8-1993, he along with other students came to the school as usual but returned by the same vehicle as the school was closed for the day. On reaching the Pahari Gate, the driver of the Matador tried to apply the brake while passing by a stationary Haryana Roadways Bus on which some passengers were boarding but it failed and the Matador hit a passenger boarding the bus with a child in his lap. Both the child and the man fell on the road. Horrified by the sequence of these events and thinking that the child might have died, the driver sped away with the vehicle. The Haryana Roadways Bus, however, followed the Matador. The driver of the Matador became panicky and jumped out of the running vehicle and ran into the street of village Chananpur. Master Tapinder Singh, S/o Shri Jagrup Singh, who was sitting behind the driver's seat, showing his presence of mind, immediately took control of steering wheel, put on the light and brought the vehicle to a halt by using the gears. But for the initiative of Master Tapinder Singh, the Matador would have fallen into deep khud endangering the lives of 25 students travelling in the van.

2. Master Tapinder Singh displayed conspicuous courage, promptitude and presence of mind in saving the lives of 25 students.

43. Shri Vir Bhan Kapur,  
Gita-Sanjay Memorial Public School,  
Lohia Nagar,  
Ghaziabad,  
Uttar Pradesh.

Shri Vir Bhan Kapur, founder of the Gita-Sanjay Memorial Public School, Ghaziabad, organised a study tour. On 29-9-1992 at about 4.00 a.m., the van carrying the party stopped at Punjab-Himachal Pradesh Border Check-Post. The driver left the van and went to the check post to show his papers. In the meantime, a truck coming from behind

hit the stationary van making it move towards the slopes. On seeing the driverless van moving towards the slopes, Shri Kapur, exhibiting conspicuous courage and presence of mind jumped out of the moving van and tried to stop it with his full strength but in vain and in the process he sustained injuries. Shri Kapur practically spread himself before the slow moving van and helped in halting the van thereby saving 3 teachers and 14 children from what would have been a serious accident.

2. Shri Kapur displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 17 persons unmindful of the grave risk to his own life.

44. Master Dhiraj Chowras,  
Poomong Tea Estate,  
P. O. Rangli Rangliot,  
District Darjeeling,  
West Bengal.

On the midnight of the 30th June, 1993, a devastating landslide occurred at Poomong Tea Estate, Darjeeling. A 14-year old boy Master Dhiraj Chowras whose mother was missing during the incident, went out in the night in search of his mother and other members of his family. During the search, he heard the cry of his cousin who was about to be buried in the mud and debris. All alone, he rescued his cousin and saved his life. Thereafter, he successfully pulled out his uncle and aunt who were also half-drowned in the pool and saved their lives although he could not trace his mother.

2. Master Dhiraj Chowras exhibited extraordinary courage and promptitude in saving three lives without caring for the grave danger to his own life.

45. Kumari Mun Mun Das,  
D/o Shri Sudhir Das,  
Village Kamala Dhawra,  
Near Radhanagar Cinema Hall,  
P. O. Sunder Chak,  
P. S. Kulti,  
District Burdwan,  
West Bengal.

On 18-7-1993, Km. Mun Mun Das along with her three friends namely Km. Putul Bauri, Km. Bulbul Rajwar and Km. Radha Bauri went to take bath in a pond. Suddenly Km. Bulbul Rajwar and Km. Radha Bauri slipped into the 5 feet deep pond and started drowning. On seeing this, Km. Mun Mun Das (9 years) who was changing her clothes near the edge of the pond jumped into the pond, even though she did not know swimming and rescued Radha Bauri from drowning.

2. Km. Mun Mun Das despite her tender age, showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a young girl from drowning unmindful of the grave risk involved to her own life.

46. Kumari Putul Bauri,  
D/o Shri Nemari Bauri,  
Village Kamala Dhawra,  
Near Radhanagar Cinema Hall,  
P. O. Sunder Chak P. S. Kulti,  
Distt. Burdwan, West Bengal.

On 18-7-1993, Kumari Putul Bauri along with her three friends namely Km. Mun Mun Das, Km. Bulbul Rajwar and Km. Radha Bauri went to take bath in a pond. Suddenly Km. Bulbul Rajwar and Km. Radha Bauri slipped into the 5 feet deep pond and started drowning. On seeing this, Km. Putul Bauri (11 years) who was changing her clothes near the edge of the pond jumped into the pond, even though she did not know swimming and rescued Km. Bulbul Rajwar from drowning.

2. Km. Putul Bauri despite her tender age showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a young girl from drowning unmindful of the grave risk involved to her own life.

47. G/162356 L OEM Ashok Kumar Pal,  
351 RMPL (GREF) Care 55  
RCC (GREF)/16 BRTF

On 24-5-1994, Shri Ashok Kumar Pal was operating the Pay Loader accompanied by CPL Ramesh Chand who was occupying co-driver's seat for widening of turning points on Kargil-Batalik road. As the tyres of the Pay Loader were worn out affecting their grip, the Pay Loader on a turn slipped and tilted towards the valley. On seeing this, Shri Pal asked CPL Ramesh Chand to jump out to save himself and simultaneously he also bailed out. Unfortunately, CPL Ramesh Chand could not jump out quickly and rolled down the valley with the Pay Loader. Shri Pal signalled the approaching vehicle, shouted for help and without wasting time, ran towards the Pay Loader down the valley only to find that CPL Ramesh Chand was sandwiched between a big boulder and hydraulic pipe of the Pay Loader. His attempt to pull him out was in vain. Not losing his cool, Shri Pal jacked up the vehicle with great difficulty endangering his own life. He removed the hydraulic pipe and successfully extricated his colleague who was subsequently evacuated.

2. Shri Pal, thus, displayed exceptional courage and presence of mind in saving the life of CPL Ramesh Chand with scant regard for his own safety.

48. G-118633L Pioneer Birbhan Prasad,  
1605—PNR COY (GREF)  
C/O 99 APO

On 02-03-1994, at about 1530 hrs., a truck driven by MT Driver Raja Ram met with an accident on DDM Road, Arunachal Pradesh while returning from MIGGING and rolled 300 feet down the valley. When the information of accident reached 105 Road Construction Company at about 1700 hrs., the Adm. Supervisor collected 30 personnel of the unit including Pioneer Birbhan Prasad and rushed to the site of the accident. On reaching the spot, they found the accident site very dangerous with steepy slope and slushy terrain. But Pioneer Birbhan Prasad took bold initiative alongwith his Adm. Supervisor and went down the valley descending the slushy slope in darkness while the others followed motivated by his courageous initiative. Pioneer Birbhan Prasad with the help of others picked up two injured personnel as well as dead bodies and brought them to the road and repeated this exercise a number of times to accomplish the task unmindful of risk involved to his life.

2. Pioneer Birbhan Prasad, thus, displayed exceptional courage, remarkable leadership, humaneness and presence of mind in saving the lives of injured persons unmindful of the risk involved to his own life.

49. G-104513 F Pioneer Jallu Ram,  
1605 (GREF) PNR COY  
C/O 99 APO

On 02-03-1994, at about 1530 hrs., a truck driven by MT Driver Raja Ram met with an accident on DDM Road, Arunachal Pradesh while returning from MIGGING and rolled 300 feet down the valley. When the information of accident reached 105 Road Construction Company at about 1700 hrs., the Adm. Supervisor collected 30 personnel of the unit to organise rescue operation. Pioneer Jallu Ram voluntarily joined the team. On reaching the spot, they found the site of the accident very dangerous with steepy slope and slushy terrain. Pioneer Jallu Ram joined the first batch of rescuers who mustered enough courage to go down the valley in the dark and brought the injured personnel to the road.

2. Pioneer Jallu Ram, thus, displayed exceptional courage, tremendous initiative and promptitude in saving the lives of injured persons unmindful of the risk involved to his own life.

50. G/164497 Y Supervisor NT II  
Joginder Kumar Chauhan,  
1594 PNR COY  
GREF, C/O 56 APO

On 02-03-1994, at about 1530 hrs., a truck driven by MT Driver Raja Ram and carrying 14 others met with

an accident on DDM Road, Arunachal Pradesh, while returning from MIGGING to 105 Road Construction Company location, and rolled 300 feet down the valley. On hearing about the accident, Supervisor NT II Shri Joginder Kumar Chauhan who was serving with 105 Road Construction Company/44 Border Roads Task Force, Project Vartek voluntarily organised a team of 30 personnel and rushed to the site of the accident. By the time they reached the site, it was dark and the slope was steep and slushy due to rain. Despite all these odds, Shri Chauhan motivated and led his team to undertake evacuation operation bringing out the injured first followed by the dead bodies from the wreckage. The valiant efforts of Shri Chauhan, thus, saved the precious lives including Rifleman Suresh Sangma.

2. Shri Joginder Kumar Chauhan displayed initiative, exceptional leadership qualities, courage and promptitude in saving the precious lives with utter disregard for his own life.

51. G/56588 Y B/R-I  
Parakalathil Varkey Thomas,  
Superintendent B/R Grade II  
General Reserve Engineer  
Force 68 RGC, C/O 56 APO

On 20-1-1994, Shri P. V. Thomas who was incharge of 112 KM long road sector Dhami Kingal of Project Deepak in Himachal Pradesh, was going to Detachment Basantpur in Government vehicle driven by MT Driver Krishan Chand accompanied by four other employees of GREF. On reaching KM 75.250 on Dhami Kingal road at 13.45 hours, Shri Thomas noticed that a civil truck loaded with wooden sleepers which had gone ahead of them was lying in a deep khud. Shri Thomas immediately stopped his vehicle, took charge and advised the four personnel accompanying him to descend to the accident site. Shri Thomas motivated these persons to descend down the valley one by one with the help of a manila rope available in their vehicle. On reaching the spot, they found three occupants of the ill-fated vehicle motionless; presumed dead and the fourth one lying sandwiched between the sleepers and boulders, severely injured. With great difficulty, the injured person was extricated under the able guidance of Shri Thomas. In the meanwhile, a state transport bus of the Himachal Pradesh State Road Transport reached the accident site and Shri Thomas took out a long seat of the bus and converted it into a make-shift stretcher. The injured person was brought to the road with the help of this improvised stretcher and was immediately rushed to the hospital.

2. Shri P. V. Thomas displayed initiative, exceptional leadership qualities, courage and promptitude in saving the life of a person.

52. G/163428W S/Wala Wazir Singh,  
1462 ADRI MI ROOM (GREF)  
C/O 99 APO

On 2-3-1994, a Government vehicle met with an accident on DDM road in the interior of Arunachal Pradesh while returning from MIGGING and fell down into deep valley alongwith 14 occupants. On hearing about this accident, S/Wala Wazir Singh rushed to the site and joined a motivated team to accomplish the noble cause and ventured down to the slushy steep slope about 300 feet down the valley in the darkness and rescued the injured R/Man Sumesh Sangma of Assam Rifles.

2. S/Wala Wazir Singh displayed tremendous initiative, exceptional leadership qualities, courage and promptitude in saving the life of one person without regard to his personal safety.

53. Master Bikram Keshari Samantara,  
At P.O. Gobardhanpur via Rahama,  
Dist. Jagatsinghpur,  
Orissa-754140.

On 18-6-1993, at 10.00 A.M., two girls namely Km. Kanta (9 years) and Km. Bharti (7 years) belonging to village Gobardhanpur were taking bath in the

river. Accidentally Km. Elurani Das was carried away by the fast flowing current. She somehow dragged her friend Km. Kanaklata alongwith her. As they were drowning, they raised hue and cry for help. The depth of the water at the site was about 25 feet and the width of the river was 120 mtrs. On seeing this, Master Bikram Keshari Samantara, a boy of 15 years, jumped into the river, swam to the spot and rescued the girls.

2. Master Bikram Keshari Samantara showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of two girls unmindful of the risk involved to his own life.

54. Master Jatinder Jit Singh Sangha,  
Village & P.O. Jandu Sangha,  
Teh. & Distt. Jalandhar,  
Punjab.

On 30-8-93 the teachers and students of Janta High School, Jandu Sangha (Distt. Jalandhar) left their classes as the beehive within the premises of the school was disturbed, resulting in the bees flying in all directions. Two young brothers, Master Happy and Master Manjit Pal could not somehow run away and the bees attacked and stung them. On seeing this, Master Jatinder Jit Singh Sangha, a student of class ten, showed courage and without caring for his own safety, wrapped himself in a durrie, rushed toward the young boys and brought them to safety one by one. The two injured boys were then attended to by a medical doctor arranged promptly by the school authorities.

2. Master Jatinder Jit Singh Sangha took exemplary initiative and showed conspicuous courage and presence of mind in saving the lives of two boys unmindful of the risk involved to his own life.

55. Km. Mamata Borah,  
Village Salmora,  
P.O. Malowapatha,  
Viz. Kakila Mukh,  
Jorhat, Assam.

On 28-7-1993 evening, Km. Mamata Borah came out to get some mud to plaster the house. Her 2½ years old nephew was playing nearby. Bajijan stream, a non-perennial stream just a couple of metres away from Mamta's house, was in spate. Suddenly, Mamata heard a cry and came running to find that her nephew had fallen into the Bajijan stream and was being carried away by the strong currents. Without caring for her own life, she jumped into the stream, swam to the spot against the current of the water and caught hold of her nephew and succeeded in reaching near the bank of the stream after sustained valiant efforts. Meanwhile, hearing the commotion, the father of the child also reached the scene and pulled them out.

2. Kumari Mamata Borah showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of her nephew from drowning unmindful of the risk involved to her own life.

56. Kumari Manisha, (Posthumous)  
130, Vishnupuri,  
P.S. Quarsi,  
Distt. Aligarh,  
Uttar Pradesh.

On 11-5-1992 at about 6 P.M. Km. Manisha was returning home from a temple in Vishnupuri alongwith her mother. She noticed a young child on the road just in front of a speeding scooter. On seeing this, Km. Manisha by instinct, rushed to save the child and pushed the child away from the path of the scooter but unfortunately she herself was run over by a Maruti Car coming at a high speed.

2. Km. Manisha showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a child but in the process made the supreme sacrifice of her own life.

57. Km. Ranita Kharnaor,  
Mawlynnu Village,  
P.O. Weiloj,  
Maharam Syiemship,  
Meghalaya.

On 21-2-1993 at about 2.00 P.M. when the elders of the village were away at work in their fields, the hut of Smt. Aidra Kharnaor caught fire. Small children of the village who were playing outside in the open space rushed to the burning hut but no one dared to go inside the hut to save the life of a 2-year old child trapped inside. Undeterred, Km. Ranita Kharnaor rushed into the burning hut and succeeded in bringing out the child safely. By the time elders returned to the village on noticing the fire, the hut and other house-hold articles were burnt to ashes.

2. Km. Ranita Kharnaor displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of her brother trapped inside the burning hut unmindful of the risk involved to her own life.

58. Master Rupesh Kumar Tiwari alias Sonu,  
Police Station Rahatgarh,  
District Sagar,  
Madhya Pradesh-470 119.

On 25-8-1994, Km. Indu Chaube (9 years) while returning home from Saraswati Shishu Mandir Rohitgarh slipped into a nallah flooded by heavy rain. Master Rupesh Kumar who was witnessing this incident from his house located nearby, immediately rushed to the spot and jumped into the nallah and successfully rescued the girl after sustained and valiant efforts. Km. Indu was later administered treatment. In this gallant act, Master Rupesh sustained head injuries.

2. Master Rupesh Kumar displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a girl from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

59. Master Shivshankar Madhukar Bidri,  
Main Road Omerga,  
Distt. Osmanabad,  
Maharashtra-413606.

On 30-9-1993, a severe earthquake in Osmanabad and Latur districts of Maharashtra caused mass destruction of human life and property. On that fateful day, Master Shivshankar who had gone to his grandparents' house in the village Kanegaon to witness the Ganesh Festival, woke up in the early hours of 30-9-1993 on hearing loud banging sounds followed by electric disconnection. Sensing danger, he dragged his grandparents out of the house one by one. The moment he accomplished this task, the whole house collapsed. Master Shivshankar thus saved the lives of his grandparents.

2. Despite his tender age, Master Shivshankar showed presence of mind and initiative in saving the lives of his grandparents.

60. Master Vivek Khare,  
Opposite Civil Hospital,  
Ganj Basoda,  
District Vidisha,  
Madhya Pradesh-464221.

On 21-5-1994, Master Vivek Khare was crossing the road. He was a four-year old boy who was later identified as Master Sona, suddenly came on the road and a matador van coming at a very high speed in that direction. Sensing danger, Master Vivek Khare, without wasting a second, ran towards the boy, caught him one hand and moved him to the other side of the road. The matador crossed the place at a high speed moments thereafter. Had Master Vivek Khare not taken the initiative or even taken a few seconds to act, the matador could have crushed Master Sona.

2. Master Vivek Khare showed conspicuous courage and presence of mind in saving the life of a child from a fatal accident unmindful of the risk involved to his own life.

G. B. PRADHAN  
Director.

MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES &  
PENSIONS

ORDER

(DEPARTMENT OF PENSION & PENSIONERS'  
WELFARE)

New Delhi, the 17th February 1995

No. 41/24/93-P&PW(G).—The President is pleased to extend the term of office prescribed for the non-official members of the Standing Committee of Voluntary Agencies (SCOVA) for the Department of Pension & Pensioners' Welfare constituted under Resolution No. 41/24/93-P&PW(G) dated 21-3-1994 upto 31st March, 1996.

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India.

ORDERED also that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments/Administrations of Union Territories, Ministries/Departments of Government of India and all other concerned.

DR. DINESH CHANDRA,  
Additional Secy.